वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 57 शनिवार 1 अगस्त 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

श्री ओम बन्ना मन्दिर को जमीन आवंटन के लिए आभार कार्यक्रम

धार्मिक स्थलों पर होगा हेरिटेज वॉक वे का निर्माण: भजनलाल

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान शौर्य और पराक्रम की भूमि होने के साथ ही आस्था और विश्वास की पावन धरती है। यहां पग-पग पर आस्था धाम हैं तथा कई महापुरुषों ने अपने अलौकिक चमत्कारों से लोकहितकारी कार्य किए हैं। श्री ओम बन्ना के प्रति श्रद्धालुओं की अटूट आस्था है। वे उन्हें सड़क दुर्घटनाओं से रक्षा करने तथा मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिए श्रद्धापूर्वक पूजते हैं।

पानी और बिजली की पर्याप्त सप्लाई की सुनिश्चित

मजबूत फैसलों से हो रहा युवाओं और किसानों का कल्याण

विकास भी-विरासत भी के साथ समग्र विकास

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार को श्री ओम बन्ना मंदिर के लिए भूमि आवंटन के उपलक्ष्य में मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित आभार समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि पाली जिले के चोटीला में श्री ओम बन्ना मंदिर के विस्तार और सुव्यवस्थित विकास के लिए हमारी सरकार द्वारा भूमि आवंटित की गई है। इससे मंदिर परिसर का अच्छा विकास होगा और धार्मिक पर्यटन को भी गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकास भी-विरासत भी के मंत्र को आत्मसात कर प्रदेश के समग्र विकास के लिए कार्य कर रही है। हमने ढाई वर्ष में विरासत स्थलों और आस्था धामों के विकास के लिए अनेक कदम उठाए हैं। राजस्थान में पृथ्वीराज चौहान, मीरा बाई, राणा सांगा, हाड़ी रानी और वीर शिरोमणि राव चंद्रसेन जैसे अनेक पैनोरमाओं का निर्माण कार्य करवाया है।

शेखावाटी की ऐतिहासिक हवेलियों का होगा संरक्षण

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2026-27 के बजट में धार्मिक पर्यटन को नई गति देने के लिए भी महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं। पुष्कर, खाटूश्यामजी, नाथद्वारा, केशोरायपाटन, डीग और चित्तौड़गढ़ जैसे धार्मिक शहरों में हेरिटेज वॉक वे का निर्माण करवाएंगे। इसी प्रकार, किराडू के मंदिर समूह के संरक्षण एवं जीर्णोद्धार के कार्य होंगे। शेखावाटी की ऐतिहासिक हवेलियों के संरक्षण के लिए भी काम किया जा रहा है।

धर्मशालाओं के निर्माण एवं संचालन के लिए बनेगी नई नीति

मुख्यमंत्री ने कहा कि देवस्थान विभाग की धर्मशालाओं की मरम्मत एवं जीर्णोद्धार के कार्य किए जाएंगे। साथ ही, श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए देवस्थान विभाग के अधीन खाली भूमि पर धर्मशालाओं के निर्माण एवं संचालन के लिए नई नीति बनाई जाएगी। इसी प्रकार, दीपावली, होली, शिवरात्रि, रामनवमी, गुरु पूर्णिमा जैसे त्योहारों पर मंदिरों में विशेष साज-सज्जा व आरती के कार्यक्रम आयोजित होंगे। उन्होंने कहा कि जहां आस्था का सम्मान होता है, वहां संस्कृति सशक्त होती है, समाज संगठित होता है और विकास को नई दिशा मिलती है। उन्होंने प्रदेशवासियों से समृद्ध सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को सहेजते हुए विकसित, समृद्ध और गौरवशाली राजस्थान बनाने की अपील की। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए पानी एवं बिजली के क्षेत्र में विभिन्न परियोजनाओं को धरातल पर उतार रही है, जिससे इनकी पर्याप्त उपलब्धता बढ़ रही है। मजबूत फैसलों से पेपरलीक पर लगाम लगाई है तथा युवाओं के लिए रिकॉर्ड भर्तियों से लेकर स्वरोजगार के समुचित अवसर उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। किसानों और पशुपालकों के कल्याण के लिए भी विभिन्न योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

गिरारगिरी में 2 अगस्त को होगा चातुर्मास कलश स्थापना समारोह

गणनी आर्यिका विन्ध्यश्री माताजी ससंघ के सान्निध्य में वर्षायोग 2026 की होगी स्थापना

ललितपुर. शाबाश इंडिया। श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र गिरारगिरी जी में गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज की प्रभावक शिष्या गणनी आर्यिका 105 विन्ध्यश्री माताजी ससंघ के मंगल सान्निध्य में वर्षायोग 2026 की स्थापना का भव्य आयोजन 2 अगस्त, रविवार को दोपहर 12 बजे से किया जाएगा। मीडिया प्रभारी डॉ. सुनील संचय ने बताया कि चातुर्मास कलश स्थापना समारोह के दौरान विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान एवं मंगल कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। समारोह को लेकर क्षेत्र में तैयारियां की जा रही हैं और श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह है। समिति के महामंत्री प्रदीप जैन मड़ावरा ने बताया कि वर्षायोग के दौरान प्रतिदिन प्रातः 7 बजे से नित्य नियम, सामायिक एवं शास्त्र स्वाध्याय होगा। वहीं, सायं 6:15 बजे से आरती एवं दीप आराधना की जाएगी। प्रत्येक रविवार प्रातः 8:30 बजे गुरु मां का विशेष प्रवचन होगा, जिसमें श्रद्धालुओं को धर्म और अध्यात्म का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। चातुर्मास के दौरान गणनी आर्यिका 105 विन्ध्यश्री माताजी के साथ आर्यिका 105 विद्वतश्री माताजी, आर्यिका 105 सुनन्दन माताजी, आर्यिका सुवंदन माताजी, आर्यिका सुचन्दन माताजी और आर्यिका सुदर्शन माताजी सहित अन्य आर्यिकाओं का भी मंगल सान्निध्य प्राप्त होगा। आयोजक ट्रस्ट समिति, प्रबंध समिति, वर्षायोग समिति एवं सकल दिगम्बर जैन क्षेत्रीय समाज ने सभी श्रद्धालुओं से चातुर्मास कलश स्थापना समारोह में अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्मलाभ लेने का आह्वान किया है।

आशा भवन ट्रस्ट को मानव सेवार्थ कपड़े व घरेलू सामान भेंट

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगम्बर जैन महासमिति के महारानी फार्म संभाग की शांति नगर इकाई के तत्वावधान में मानव सेवा के उद्देश्य से आशा भवन ट्रस्ट ऑफ इंडिया को उपयोगी कपड़े, विभिन्न घरेलू सामान एवं नकद राशि भेंट की गई। इस सेवा कार्य में समिति के सदस्यों एवं सहयोगकताओं ने सहभागिता निभाते हुए जरूरतमंदों की सहायता के लिए सामग्री उपलब्ध कराई। एकत्रित कपड़े एवं घरेलू सामान ट्रस्ट को सौंपे गए, ताकि इनका उपयोग जरूरतमंद लोगों की सहायता के लिए किया जा सके। दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल की मंत्री शांति काला ने सेवा कार्य में सहयोग देने वाले सभी सहयोगकर्ताओं के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया। उन्होंने मानव सेवा के ऐसे कार्यों में समाज के लोगों से आगे बढ़कर सहभागिता निभाने का आह्वान किया।

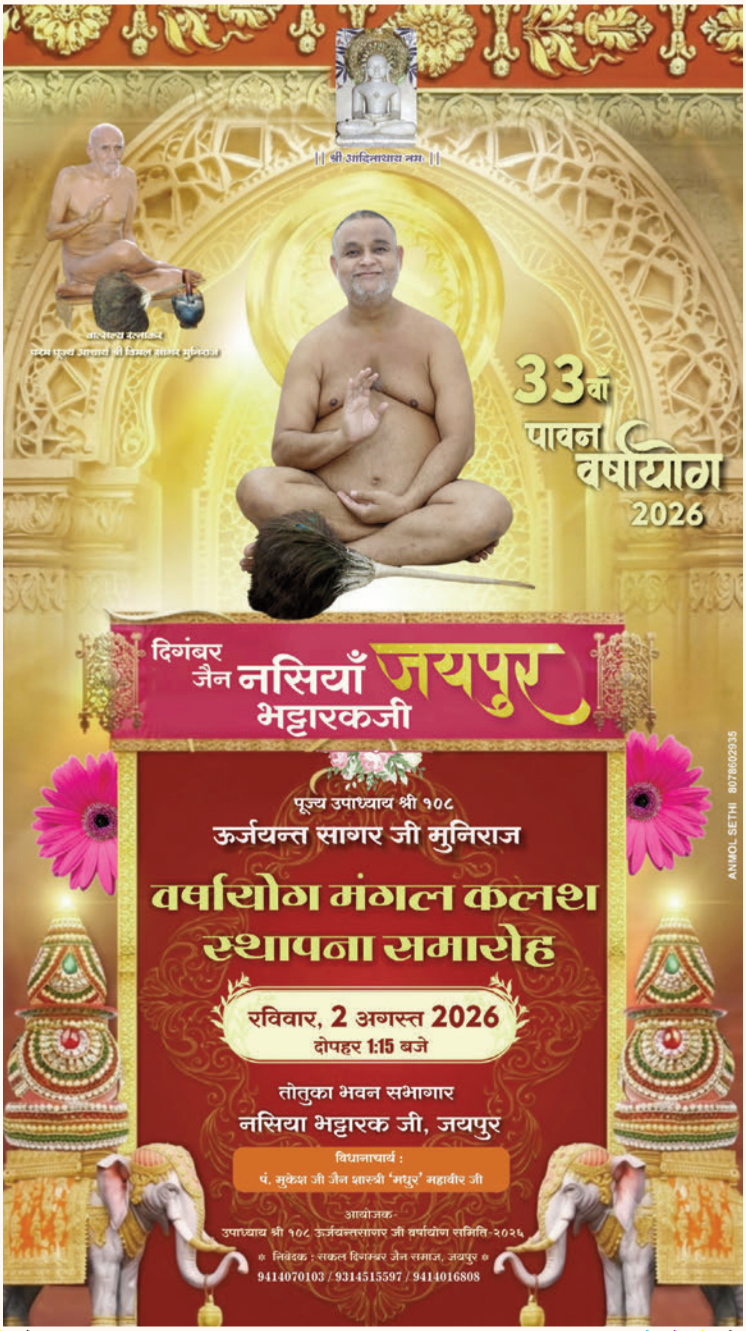

9 वां पावन
वर्षायोग 2026
परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज एवं
पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य
गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज
पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज
परम पूज्य सरल स्वभावी संत मुनिवर
श्री विश्वविजय
सागर जी महाराज
मंगल कलश स्थापना
सम्यक दर्शन
सम्यक ज्ञान
सम्यक चरित्र
प्रतिष्ठाचार्य
सुरेन्द पंडित जी
सलुंबर
संगीतकार
मनोज जैन
जयपुर
2 अगस्त 12:30 बजे से
स्थान - चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर
पारस विहार, मुहाना मंडी, जयपुर (राज)
कार्यक्रम के तत्पश्चात वात्सल्य भोजन की व्यवस्था है
- आयोजक एवं निवेदक -
सकल दिगंबर जैन समाज पारस विहार मुहानामंडी जयपुर
संपर्क सूत्र
उपाध्यक्ष: धर्मेंद्र गोदीका | मोबाइल: 8742078777
संयोजक: प्रतीक गोदीका | मोबाइल: 9680596876

राजनीति

पर्वत केवल ऊंचाइयां नहीं, मानव साहस की जीवंत पहचान हैं

सुरेश सिंह बैस 'शाश्वत'

प्रकृति ने मानव को अनेक अनमोल उपहार दिए हैं, जिनमें पर्वत सबसे विराट, स्थिर और प्रेरणादायी हैं। हिमालय की हिमाच्छादित चोटियां हों, सह्याद्रि की पर्वत श्रृंखलाएं अथवा विंध्य और सतपुड़ा के विस्तृत पर्वतीय अंचल, ये केवल भू-आकृतियां नहीं, बल्कि साहस, धैर्य, अनुशासन और आत्मविश्वास के प्रतीक हैं। 1 अगस्त को मनाया जाने वाला पर्वतारोहण दिवस इन्हीं मूल्यों और दुर्गम ऊंचाइयों को चुनौती देने वाले साहसी पर्वतारोहियों के सम्मान का अवसर है। पर्वतारोहण केवल एक साहसिक खेल नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की सशक्त प्रक्रिया भी है। जब कोई पर्वतारोही दुर्गम रास्तों, बर्फीले तूफानों, तेज हवाओं और ऑक्सीजन की कमी जैसी कठिन परिस्थितियों का सामना करता है, तब उसके भीतर आत्मबल, अनुशासन, नेतृत्व और कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है। पर्वतारोहण हमें यह भी सिखाता है कि जीवन की कठिनाइयां पर्वत जैसी क्यों न हों, तैयारी, धैर्य और दृढ़ इच्छाशक्ति से उन्हें पार किया जा सकता है। भारत पर्वतीय संपदा से समृद्ध देश है। उत्तर में विराट हिमालय न केवल देश की प्राकृतिक पहचान है, बल्कि अनेक नदियों का उद्गम स्थल, जैव विविधता का संरक्षक और करोड़ों लोगों की आजीविका का आधार भी है। भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक परंपरा में भी पर्वतों का विशेष महत्व रहा है। कैलाश से लेकर बद्रीनाथ, केदारनाथ, अमरनाथ और वैष्णो देवी तक अनेक आस्था केंद्र पर्वतीय क्षेत्रों से जुड़े हैं। ये स्थल प्रकृति और आध्यात्मिक चेतना के अद्भुत समन्वय का संदेश देते हैं। पर्वतारोहण के इतिहास में 29 मई 1953 का दिन विशेष महत्व रखता है, जब तेनजिंग नोर्गे और एडमंड हिलेरी ने माउंट एवरेस्ट के शिखर पर सफलतापूर्वक पहुंचकर इतिहास रचा। भारत के पर्वतारोहियों ने भी विश्वभर में देश का गौरव बढ़ाया है। बछेंद्री पाल 1984 में एवरेस्ट पर पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला बनीं।

संपादकीय

वंदे मातरम् को कानूनी संरक्षण

राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' केवल शब्दों और स्वरों की रचना नहीं, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की चेतना, संघर्ष और राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक है। संसद द्वारा 'राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम' में संशोधन के माध्यम से वंदे मातरम् को राष्ट्रगान 'जन गण मन' के समान कानूनी संरक्षण देने की पहल इसलिए महत्वपूर्ण मानी जानी चाहिए कि यह देश के एक ऐतिहासिक राष्ट्रीय प्रतीक के सम्मान को विधिक आधार प्रदान करती है। विधेयक के प्रावधानों के अनुसार जानबूझकर राष्ट्रीय गीत के गायन में बाधा उत्पन्न करने या उससे संबंधित सभा में व्यवधान डालने पर दंड का प्रावधान किया गया है। वंदे मातरम् का भारतीय इतिहास में स्थान किसी परिचय का मोहताज नहीं है। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित इस गीत ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान असंख्य क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरित किया। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष के समय ''वंदे मातरम्'' केवल एक उद्घोष नहीं था, बल्कि स्वतंत्र भारत के स्वप्न और मातृभूमि के प्रति समर्पण की अभिव्यक्ति बन गया था। देश के विभिन्न हिस्सों में स्वतंत्रता सेनानियों ने इसे राष्ट्रीय चेतना जगाने के माध्यम के रूप में अपनाया। 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा में तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने वंदे मातरम् के ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करते हुए इसे 'जन गण मन' के समान सम्मान और प्रतिष्ठा दिए जाने की बात कही थी। ऐसे में यह स्वाभाविक प्रश्न लंबे समय से उठता रहा है कि जब दोनों राष्ट्रीय प्रतीकों को सम्मान की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना गया, तब कानूनी संरक्षण के स्तर पर अंतर क्यों बना रहा? प्रस्तावित कानूनी संरक्षण को किसी नागरिक पर वंदे मातरम् गाने की बाध्यता के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। लोकतंत्र में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संवैधानिक अधिकारों का सम्मान सर्वोपरि है। किसी व्यक्ति का मौन रहना अथवा गीत न गाना और जानबूझकर उसका अपमान करना या उसके गायन में व्यवधान उत्पन्न करना दो अलग-अलग विषय हैं। कानून का उद्देश्य यदि दूसरे प्रकार के कृत्य को रोकना है, तो इसे उसी सीमित संदर्भ में समझा जाना चाहिए। इस विषय को सांप्रदायिक या राजनीतिक विवाद में बदलने के बजाय राष्ट्रीय प्रतीकों के सम्मान और नागरिक स्वतंत्रता के बीच संतुलन की दृष्टि से देखना अधिक उचित होगा। भारत की शक्ति उसकी विविधता में निहित है। यहां अलग-अलग धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं के लोग समान संवैधानिक अधिकारों के साथ रहते हैं। इसलिए राष्ट्रीय सम्मान से संबंधित किसी भी कानून का क्रियान्वयन निष्पक्ष, स्पष्ट और संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप होना आवश्यक है। वंदे मातरम् की 150 वर्ष की ऐतिहासिक यात्रा भारतीय राष्ट्रीय चेतना की यात्रा से गहराई से जुड़ी हुई है। नई पीढ़ी को इसके इतिहास, स्वतंत्रता आंदोलन में इसकी भूमिका और इसके भावार्थ से परिचित कराना भी उतना ही आवश्यक है जितना इसके सम्मान की कानूनी व्यवस्था करना।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

अश्लीलता का महिमामंडन?

डॉ. प्रियंका सौरभ

जंतर-मंतर लोकतांत्रिक भारत का महत्वपूर्ण सार्वजनिक मंच है, जहां नागरिक अपनी बात सरकार और समाज तक पहुंचाने के लिए एकत्र होते हैं। यह स्थान विरोध, असहमति और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की पहचान बन चुका है। लेकिन जब किसी प्रदर्शन में भाषा की मर्यादा टूटती है, गाली-गलौज को प्रतिरोध का औजार और अश्लीलता को साहस का पर्याय बताया जाने लगता है, तब सवाल उठता है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमा क्या है? क्या लोकतंत्र में विरोध का अर्थ हर प्रकार की भाषा और व्यवहार को उचित ठहराना है? हाल में जंतर-मंतर पर कुछ प्रदर्शनकारियों द्वारा कथित रूप से आपत्तिजनक भाषा के इस्तेमाल को लेकर विवाद सामने आया। समाज के एक वर्ग ने ऐसी अभिव्यक्ति को पितृसत्ता के विरुद्ध विद्रोह और निर्भीकता से जोड़कर देखा, जबकि दूसरे वर्ग ने इसे सार्वजनिक शालीनता और सामाजिक मर्यादा के विपरीत माना। यह बहस किसी एक घटना तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व के बीच संतुलन का प्रश्न भी उठाती है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(1)(क) नागरिकों को वाक एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देता है, लेकिन यह अधिकार निरंकुश नहीं है। अनुच्छेद 19(2) भारत की संप्रभुता और अखंडता, राज्य की सुरक्षा, सार्वजनिक व्यवस्था, शिष्टाचार या सदाचार, मानहानि और न्यायालय की अवमानना सहित निर्धारित आधारों पर युक्तियुक्त प्रतिबंध की अनुमति देता है। स्पष्ट है कि संविधान स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी की अवधारणा को भी महत्व देता है। लोकतंत्र में विरोध का अधिकार आवश्यक है। सरकार की आलोचना करना, नीतियों पर सवाल उठाना और असहमति प्रकट करना लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत करता है। किंतु किसी अभिव्यक्ति की वैधता का निर्धारण केवल इस आधार पर नहीं होना चाहिए कि उसे विरोध के दौरान व्यक्त किया गया। भाषा और व्यवहार का मूल्यांकन कानून तथा संवैधानिक मानकों के अनुरूप होना चाहिए। यहां समानता का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। किसी सार्वजनिक अभिव्यक्ति का मूल्यांकन वक्ता के महिला या पुरुष होने के आधार पर अलग-अलग नहीं होना चाहिए। यदि किसी महिला के विरुद्ध अपमानजनक भाषा अनुचित है, तो पुरुष के विरुद्ध वैसी ही भाषा को भी सामान्य नहीं माना जाना चाहिए। समान अधिकारों के साथ समान उत्तरदायित्व लोकतांत्रिक समानता का आवश्यक तत्व है। पितृसत्ता, लैंगिक असमानता और महिलाओं के साथ होने वाला अन्याय गंभीर सामाजिक प्रश्न हैं। इनके विरुद्ध मुखर संघर्ष आवश्यक है, लेकिन ऐसे संघर्ष का नैतिक बल तब अधिक प्रभावी होता है, जब वह तर्क, गरिमा और संवैधानिक मर्यादा के साथ आगे बढ़े। किसी उद्देश्य की गंभीरता अपने-आप प्रत्येक साधन को उचित नहीं बना देती। सोशल मीडिया के दौर में उत्तेजक और विवादास्पद भाषा तेजी से वायरल होती है। इससे कभी-कभी यह धारणा बनने लगती है कि जितनी आक्रामक अभिव्यक्ति होगी, उसका प्रभाव उतना ही अधिक होगा। जबकि लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति शब्दों की कटुता नहीं, विचारों की मजबूती, संवाद और तर्क में निहित है। इसलिए किसी कथित आपत्तिजनक अभिव्यक्ति पर कार्रवाई का प्रश्न व्यक्ति के लिंग, विचारधारा अथवा सामाजिक पहचान से नहीं, कानून और उसके आचरण से तय होना चाहिए। साथ ही यह भी जरूरी है कि आलोचनात्मक, असुविधाजनक या तीखी अभिव्यक्ति को केवल असहमति के कारण अश्लील अथवा गैरकानूनी घोषित न किया जाए।

कितनी भी जटिल परिस्थितियां आएं, आत्मा की दिशा सदैव मोक्षमार्ग की ओर हो : आचार्य विहर्ष सागर

धर्मसभा में आचार्यश्री ने बताया तत्त्वार्थ सूत्र का महत्व, कहा- देव, शास्त्र और गुरु को जीवन में दें सर्वोच्च स्थान

किशनगढ़. शाबाश इंडिया

आर. के. कम्युनिटी सेंटर में शुक्रवार को प्रातः धर्मसभा श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक वातावरण में आयोजित हुई। धर्मसभा का शुभारंभ आचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज, आचार्य 108 श्री विराग सागर जी महाराज एवं आचार्य 108 श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के चित्रों के अनावरण और दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर पूर्वाचार्यों के चित्रों पर अर्घ्य भी समर्पित किए गए। कार्यक्रम में पुण्यार्जक परिवार बनने का सौभाग्य पीयूष-अमित अजमेरा (अजमेरा बुक हाउस) परिवार को प्राप्त हुआ। मंगलाचरण रीना बड़जात्या ने प्रस्तुत किया, जबकि कार्यक्रम का संचालन कमल बैद ने किया। धर्मसभा में आर्यिका विदुहर्ष माताजी एवं आर्यिका विजयाहर्ष माताजी ने भी श्रद्धालुओं को प्रेरणादायी उद्बोधन दिया। इस दौरान दिल्ली से आए श्रद्धालुओं ने आचार्य 108 श्री विहर्ष सागर जी महाराज के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

आत्मा की दिशा सीधी और मोक्षमार्ग की ओर रखें

धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य विहर्ष सागर जी महाराज ने कहा कि सर्प की विशेषता तिरछा चलना है, लेकिन भगवान महावीर का संदेश है कि संसार में व्यवहारिक रूप से कितनी भी जटिल परिस्थितियां क्यों न आएं, आत्मा की दिशा सदैव सीधी और मोक्षमार्ग की ओर होनी चाहिए। उन्होंने जैन दर्शन के महान ग्रंथ तत्त्वार्थ सूत्र का महत्व बताते हुए कहा कि इसकी रचना आचार्य उमास्वामी ने की। आचार्यश्री ने उनके जीवन प्रसंगों का उल्लेख करते हुए बताया कि गहन अध्ययन और साधना के माध्यम से उन्होंने मोक्षमार्ग का अनुसरण किया। आचार्यश्री ने एक प्रसंग सुनाते हुए कहा कि आचार्य उमास्वामी एक बार आहार के लिए निकले तो एक ब्राह्मण के घर पर दर्शन, ज्ञान, चरित्र लिखा हुआ था। उन्होंने इनके आगे सम्यक शब्द जोड़कर सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र लिखा। इन तीनों की एकता को ही मोक्षमार्ग बताया गया है।

तत्त्वार्थ सूत्र जैन धर्म को समझने की कुंजी

आचार्यश्री ने कहा कि तत्त्वार्थ सूत्र जैन धर्म को समझने की कुंजी है। इसके 10 अध्यायों में सम्यग्दर्शन, जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष और लोक सहित जैन दर्शन के मूल सिद्धांतों का सरल एवं वैज्ञानिक निरूपण किया गया है। जो व्यक्ति तत्त्वार्थ सूत्र

का गंभीरता से अध्ययन करता है, वह जैन धर्म के मूल स्वरूप को भली-भांति समझ सकता है। सम्यक दर्शन की व्याख्या करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि यह श्रद्धा, विश्वास और आस्था का स्वरूप है। उन्होंने पंडित टोडरमल का उदाहरण देते हुए धर्म के प्रति अटूट आस्था और समर्पण का महत्व समझाया। आचार्यश्री ने कहा कि जीवन में देव, शास्त्र और गुरु को सर्वोच्च स्थान देना चाहिए। जब संसार साथ छोड़ देता है, तब यही तीनों वास्तविक सहारा बनते हैं। उन्होंने कहा कि व्यापार और व्यवहार भी धर्म के आधार पर होना चाहिए। उन्होंने वर्तमान जीवनशैली का उल्लेख करते हुए कहा कि मनुष्य जितना ध्यान मोबाइल पर देता है, यदि उतना ही ध्यान देव, शास्त्र और गुरु की ओर लगाए तो जीवन की दिशा बदल सकती है। धर्म को केवल पूजा तक सीमित न रखते हुए उसे आचरण में उतारना चाहिए। यही जीवन को सफल, सार्थक और मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर करने का मार्ग है।

राजस्थान में स्वास्थ्य शिक्षा की नई पहल, आरोग्य भारती और राजस्थान विश्वविद्यालय के बीच समझौता

युवाओं को मिलेगा स्वदेशी स्वास्थ्य कौशल, इंटर्नशिप एवं रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण का अवसर

जयपुर. शाबाश इंडिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप विद्यार्थियों को कौशल आधारित, अनुभवात्मक एवं रोजगारोन्मुख शिक्षा उपलब्ध कराने की दिशा में आरोग्य भारती, जयपुर प्रांत एवं राजस्थान विश्वविद्यालय के बीच स्वास्थ्य आधारित इंटर्नशिप, कौशल विकास, स्वदेशी स्वास्थ्य प्रशिक्षण तथा प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम संचालित करने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। आरोग्य भारती की ओर से प्रांत अध्यक्ष वैद्य केदारनाथ शर्मा तथा राजस्थान विश्वविद्यालय की ओर से अतिरिक्त रजिस्ट्रार ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर कर दस्तावेजों का आदान-प्रदान किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सहायक कुल सचिव संजय शर्मा एवं अतिरिक्त निदेशक अरविंद कुमार शर्मा भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में आरोग्य भारती के प्रांत सचिव डॉ. श्रीराम तिवाड़ी, प्रांत सहकोषाध्यक्ष डॉ. इंद्र कुमार जैन, प्रांत सुपोषण आयाम प्रमुख डॉ. तारकेश्वर शर्मा, प्रांत महिला कार्य प्रमुख डॉ. शारदा टाक, डॉ. के. के. शर्मा एवं डॉ. श्वेता चौरसिया सहित अनेक पदाधिकारी एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों को मिलेगा व्यावहारिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण

वक्ताओं ने कहा कि यह समझौता राजस्थान में स्वास्थ्य शिक्षा एवं जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण पहल है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को आयुर्वेद, योग, सुपोषण, जीवनशैली प्रबंधन, निवारक स्वास्थ्य, सामुदायिक स्वास्थ्य तथा भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित व्यावहारिक प्रशिक्षण मिलेगा। साथ ही उन्हें स्वास्थ्य संस्थानों एवं समाज के बीच कार्य करने का वास्तविक अनुभव भी प्राप्त होगा। समझौते के तहत भविष्य में विभिन्न प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम, अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम, इंटर्नशिप, स्वास्थ्य जागरूकता अभियान, शोध परियोजनाएं तथा जनस्वास्थ्य गतिविधियां संचालित की जाएंगी। इससे विद्यार्थियों में कौशल विकास, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा रोजगारोन्मुख दक्षता का विकास होगा। वक्ताओं ने विश्वास जताया कि राजस्थान विश्वविद्यालय एवं आरोग्य भारती का यह सहयोग स्वास्थ्य शिक्षा के क्षेत्र में एक आदर्श मॉडल सिद्ध होगा। यह पहल ''स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ परिवार, स्वस्थ ग्राम एवं स्वस्थ राष्ट्र'' की संकल्पना को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। साथ ही युवाओं को भारतीय स्वास्थ्य परंपरा से जोड़ते हुए उन्हें समाजोपयोगी, दक्ष एवं संवेदनशील स्वास्थ्य स्वयंसेवक के रूप में विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होगी।

चातुर्मास कलश स्थापना महोत्सव को लेकर युवाशक्ति ने संभाला मोर्चा

2 अगस्त के आयोजन की व्यवस्थाओं में सहयोग का लिया संकल्प, युवा महिलाओं ने भी दिखाई उत्साहपूर्ण भागीदारी

जयपुर. शाबाश इंडिया

गणिनी आर्यिका 105 श्री विभाश्री माताजी ससंघ के पावन चातुर्मास एवं 2 अगस्त को होने वाले कलश स्थापना महोत्सव की तैयारियों को लेकर विनयश्री माताजी के सान्निध्य में युवाओं की प्रेरणादायी बैठक आयोजित हुई। प्रचार संयोजक जिनेश कुमार जैन ने बताया कि बैठक में बड़ी संख्या में युवाओं ने भाग लिया और एक स्वर में 2 अगस्त को होने वाले कलश स्थापना महोत्सव की व्यवस्थाओं में सक्रिय सहयोग करने का संकल्प लिया। युवाओं ने बिना किसी पद, प्रतिष्ठा या अपेक्षा के धर्मसेवा को सर्वोपरि मानते हुए आयोजन समिति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने की बात कही। युवाओं ने विश्वास दिलाया कि समिति की ओर से सौंपी जाने वाली प्रत्येक जिम्मेदारी का निर्वहन पूर्ण निष्ठा, अनुशासन, समर्पण और उत्साह के साथ किया जाएगा। बैठक में युवा महिलाओं की भी उत्साहपूर्ण एवं उल्लेखनीय सहभागिता रही। सभी ने एकजुट होकर आयोजन को सफल और यादगार बनाने का संकल्प व्यक्त किया। आयोजन की तैयारियों को लेकर युवाओं में विशेष उत्साह दिखाई दिया। विभिन्न व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित तरीके से संपन्न कराने के लिए युवाशक्ति और आयोजन समिति के बीच समन्वय बनाकर कार्य करने पर जोर दिया गया। इस अवसर पर पूज्य माताजी ने जयपुर, राजस्थान सहित देशभर के जैन समाज से अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर धर्म प्रभावना के इस पुण्य अवसर का लाभ लेने का आह्वान किया। उन्होंने श्रद्धालुओं से कलश स्थापना महोत्सव के साक्षी बनने तथा मंगल आशीर्वाद एवं धर्मलाभ प्राप्त करने की अपील की।

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने किया एयू जयपुर मैराथन 2027 के पंजीकरण पोस्टर का विमोचन

2 अगस्त को त्रिमूर्ति मानसून रन से खुलेंगे पंजीकरण, 14 फरवरी 2027 को होगा 18वां संस्करण

जयपुर. शाबाश इंडिया। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने राजस्थान गौरव अवॉर्ड्स समारोह में संस्कृति युवा संस्था एवं वर्ल्ड ट्रेड पार्क की ओर से एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक के सहयोग से आयोजित होने वाली एयू जयपुर मैराथन 2027 के पंजीकरण पोस्टर का विमोचन किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। संस्कृति युवा संस्था के अध्यक्ष एवं एयू जयपुर मैराथन के मुख्य आयोजक पंडित सुरेश मिश्रा ने बताया कि एयू जयपुर मैराथन का 18वां संस्करण 14 फरवरी 2027 को वैलेंटाइन डे के अवसर पर विश्वस्तरीय स्वरूप में आयोजित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस बार मैराथन का अभियान विशेष संदेश के साथ आगे बढ़ेगा। फ्रेंडशिप डे पर दोस्तों के साथ दौड़ने से इसकी शुरूआत होगी और वैलेंटाइन डे पर स्वस्थ जीवन, अपनत्व और साथ मिलकर आगे बढ़ने का उत्सव मनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह केवल खेल आयोजन नहीं, बल्कि रिश्तों को मजबूत करने, फिटनेस को अपनाने और समाज को एक सूत्र में जोड़ने का अभियान है। एयू जयपुर मैराथन एसोसिएशन ऑफ इंटरनेशनल मैराथन्स एंड डिस्टेंस रेसेज से प्रमाणित मैराथन है तथा वर्ल्ड मैराथन मेजर्स क्वालिफायर के रूप में भी पहचान रखती है। पिछले 17 वर्षों में इस आयोजन के माध्यम से लाखों धावक एक मंच पर आ चुके हैं।

2 अगस्त से शुरू होंगे पंजीकरण

एयू जयपुर मैराथन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इवेंट मैनेजमेंट के प्रबंध निदेशक मुकेश मिश्रा ने बताया कि 2 अगस्त को फ्रेंडशिप डे के अवसर पर जयपुर रनर्स क्लब की ओर से आयोजित त्रिमूर्ति मानसून रन के दौरान एयू जयपुर मैराथन 2027 के पंजीकरण का औपचारिक शुभारंभ किया जाएगा। त्रिमूर्ति मानसून रन का आयोजन नेचुरल पर्ल फार्म स्टे, कूकस में होगा, जहां जयपुर के 1,000 से अधिक धावक एक साथ दौड़ लगाकर एयू जयपुर मैराथन 2027 के अभियान की शुरूआत करेंगे। उन्होंने बताया कि पहले चरण में केवल फुल मैराथन 42.195 किलोमीटर और हाफ मैराथन 21.097 किलोमीटर के लिए पंजीकरण खोले जाएंगे। हाफ मैराथन के लिए 7,500 सीटें उपलब्ध रहेंगी, जबकि फुल मैराथन के लिए 2,500 सीटें निर्धारित की गई हैं।

ज़िंदगी की पेंसिल से ऐसा लिखें, जिसे समय भी मिटा न सके

''ज़िंदगी एक पेंसिल की तरह है, जो हर दिन छोटी होती जा रही है... इसलिए खत्म होने से पहले कुछ ऐसा लिख जाओ, जिसे वक्त भी मिटा न सके।'' यह पंक्ति जीवन की एक गहरी सच्चाई को बहुत सरल शब्दों में व्यक्त करती है। जिस प्रकार पेंसिल का हर उपयोग उसे थोड़ा-थोड़ा छोटा कर देता है, उसी प्रकार हमारे जीवन का हर बीतता दिन हमारी आयु को थोड़ा कम कर देता है। समय कभी रुकता नहीं और जो पल एक बार निकल जाता है, वह फिर लौटकर नहीं आता। इसलिए यह हमारे हाथ में है कि हम अपने जीवन के प्रत्येक दिन का उपयोग किस प्रकार करते हैं। जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि केवल धन, पद या प्रसिद्धि प्राप्त करना नहीं है। वास्तविक सफलता यह है कि हमारे जाने के बाद भी लोग हमें हमारे अच्छे व्यवहार, ईमानदारी, सेवा, सहयोग और मानवीय मूल्यों के कारण याद करें। इतिहास में उन्हीं लोगों का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है, जिन्होंने अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज और मानवता के लिए कुछ अच्छा किया। उन्होंने अपने कर्मों से ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए, जिन्हें समय भी मिटा नहीं सका। हर व्यक्ति के जीवन में कठिनाइयां आती हैं। कभी परिस्थितियां साथ नहीं देतीं, कभी अपने लोग भी दूर हो जाते हैं और कभी मेहनत का परिणाम मिलने में देर होती है। लेकिन यही संघर्ष व्यक्ति के चरित्र को मजबूत बनाता है। कठिन समय में धैर्य, संयम और सत्य का साथ छोड़ने वाला व्यक्ति क्षणिक लाभ तो पा सकता है, लेकिन स्थायी सम्मान नहीं। वहीं, जो व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी अपने सिद्धांतों पर अडिग रहता है, उसका जीवन दूसरों के लिए प्रेरणा बन जाता है। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हमारे शब्द और कर्म ही हमारी वास्तविक पहचान बनाते हैं। मधुर वाणी, विनम्र व्यवहार और दूसरों की सहायता करने की भावना ऐसे गुण हैं, जो किसी भी व्यक्ति को महान बना सकते हैं। यदि हम प्रतिदिन किसी एक व्यक्ति के जीवन में भी मुस्कान ला सकें, किसी जरूरतमंद की सहायता कर सकें, किसी दुखी व्यक्ति का मनोबल बढ़ा सकें या किसी बच्चे को अच्छे संस्कार दे सकें, तो यही हमारे जीवन की सबसे सुंदर लिखावट होगी। समय की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह कभी किसी के लिए नहीं रुकता। इसलिए जीवन को शिकायतों, ईर्ष्या, क्रोध और अहंकार में व्यर्थ करने के बजाय प्रेम, सद्भाव, परिश्रम और सकारात्मक सोच के साथ जीना चाहिए। अच्छे विचार और अच्छे कर्म ही वह अमिट स्याही हैं, जिनसे लिखा गया जीवन वर्षों बाद भी लोगों के हृदय में जीवित रहता है। आइए, संकल्प लें कि जब तक जीवन रूपी यह पेंसिल हमारे हाथ में है, तब तक हम अपने चरित्र, व्यवहार और कर्मों से ऐसी इबारत लिखें, जिसे समय की धूल भी कभी धुंधला न कर सके। यही सार्थक जीवन की सबसे बड़ी पहचान है और यही मनुष्य की सच्ची विरासत भी है।

नितिन जैन: मोबाइल : 9215635871

9 अगस्त को निकलेगी अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा एकता संघ की मुनि-आर्यिका दर्शन यात्रा

जयपुर के विभिन्न जैन मंदिरों में विराजमान आचार्य, मुनि और आर्यिका संघ के कराए जाएंगे दर्शन

जयपुर. शाबाश इंडिया। अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा एकता संघ, मानसरोवर संभाग जयपुर की ओर से प्रत्येक वर्ष चातुर्मास के दौरान जयपुर में विराजमान आचार्य, मुनि एवं आर्यिका माताजी ससंघ के दर्शनार्थ श्रद्धालुओं के लिए विशेष यात्रा का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में इस वर्ष रविवार, 9 अगस्त को एकदिवसीय ''मुनि-आर्यिका दर्शन यात्रा'' का आयोजन किया जाएगा। यात्रा का शुभारंभ प्रातः 6:30 बजे वरुण पथ दिगंबर जैन मंदिर से गणिनी आर्यिका 105 श्री विभाश्री माताजी ससंघ के मंगल आशीर्वाद एवं दर्शन लाभ के साथ होगा। संघ के अध्यक्ष कुलदीप छाबड़ा एवं महामंत्री अनंत जैन ने बताया कि यात्रा का उद्देश्य श्रद्धालुओं को जयपुर के विभिन्न जैन मंदिरों एवं वहां विराजमान संतों के दर्शन का लाभ प्रदान करने के साथ समाज में धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ करना है। यात्रा के दौरान जनकपुरी, भट्टारक जी की नसियां, विवेक विहार, मंगल विहार, पारस विहार, मीरा मार्ग, चित्रकूट कॉलोनी, बीलवा एवं पदमपुरा सहित विभिन्न जैन मंदिरों में विराजमान आचार्य, मुनि एवं आर्यिका माताजी ससंघ के दर्शन कराए जाएंगे। इसके साथ ही विभिन्न जैन मंदिरों और तीर्थ स्थलों के दर्शन का भी श्रद्धालुओं को अवसर मिलेगा। यात्रा के मुख्य संयोजक अमित जैन अजमेरा, शशांक जैन एवं प्रिया बाकलीवाल ने बताया कि गत वर्ष आयोजित दर्शन यात्रा में 225 श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया था। इस वर्ष भी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के यात्रा में शामिल होने की संभावना है। यात्रा की व्यवस्थाओं के लिए मंदिर स्तर पर संयोजकों की नियुक्ति की गई है। करीब 50 युवा कार्यकर्ता विभिन्न व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी संभालेंगे, ताकि श्रद्धालुओं को सुगम एवं व्यवस्थित रूप से दर्शन यात्रा का लाभ मिल सके।

अभिषेक जैन बिट्टू
मोबाइल : 9829566545

सीबीएसई क्लस्टर ताइक्वांडो चैंपियनशिप में कोटा का परचम

आरुषि ने जीता स्वर्ण, दैविक को रजत, अर्पित और वेदिका ने हासिल किए कांस्य पदक

कोटा. शाबाश इंडिया। दौसा में 25 से 29 जुलाई तक आयोजित सीबीएसई क्लस्टर ताइक्वांडो चैंपियनशिप में कोटा डिस्ट्रिक्ट ताइक्वांडो एसोसिएशन के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कोटा का नाम रोशन किया। प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट खेल कौशल का प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक अपने नाम किए। एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल कुमार ने बताया कि प्रतियोगिता में आरुषि ने अंडर-17 के 68 किलोग्राम से अधिक भार वर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीता। वहीं दैविक सिंगल ने अंडर-78 किलोग्राम भार वर्ग में बेहतरीन मुकाबलों के बाद रजत पदक हासिल किया। इसके अलावा अर्पित सिंह ने अंडर-55 किलोग्राम भार वर्ग तथा वेदिका धाकड़ ने अंडर-14 के 32 किलोग्राम भार वर्ग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक अपने नाम किए। पदक विजेता खिलाड़ियों की उपलब्धि पर एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल कुमार ने सभी को बधाई देते हुए कहा कि यह सफलता खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत, अनुशासित प्रशिक्षण और आत्मविश्वास का परिणाम है। उन्होंने खिलाड़ियों के अभिभावकों एवं प्रशिक्षकों के सहयोग और प्रोत्साहन की भी सराहना की। अनिल कुमार ने कहा कि कोटा डिस्ट्रिक्ट ताइक्वांडो एसोसिएशन के खिलाड़ी लगातार बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। आने वाले समय में खिलाड़ी राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए कोटा, राजस्थान और देश का नाम रोशन करेंगे। खिलाड़ियों की सफलता पर ऋषि राज धाकड़, रितिका, शिवानी सिंगल, ममता मीना, डी. के. शर्मा सहित एसोसिएशन के पदाधिकारियों, अभिभावकों एवं खेल प्रेमियों ने खुशी जताते हुए सभी पदक विजेता खिलाड़ियों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

राजस्थान अधिस्वीकृत पत्रकार संघ का गठन : डा. अखिल बंसल बने संयोजक

जयपुर. शाबाश इंडिया। प्रदेश के अधिस्वीकृत पत्रकारों को एक सशक्त, लोकतांत्रिक एवं गैर-राजनीतिक मंच उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करते हुए राजस्थान अधिस्वीकृत पत्रकार संघ के गठन की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है। संगठन के प्रथम चरण में वरिष्ठ पत्रकार एवं समन्वय वाणी के संपादक डा. अखिल बंसल (जयपुर) को संघ का संयोजक नियुक्त किया गया है। साथ ही संगठन को नीतिगत दिशा प्रदान करने के लिए 9 सदस्यीय एडवाइजरी बोर्ड का गठन किया गया है। संघ के गठन की प्रारंभिक तैयारियों में डा. अखिल बंसल की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संगठन का लोगो, सदस्यता प्रपत्र तथा विस्तृत संविधान तैयार कर एक सुदृढ़ एवं पारदर्शी संगठनात्मक ढांचा विकसित किया गया है। संविधान में लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली, सदस्य अधिकार, संगठनात्मक संरचना तथा चुनाव व्यवस्था का समुचित प्रावधान किया गया है। संगठन के विस्तार में वरिष्ठ पत्रकार धनरूप लाहोटी - नागौर,रामानंद शर्मा - झुंझुनूं, डा. भरत मिश्र- जयपुर, डा. राजकमल पारीक - पाली, अनिल माहेश्वरी- अजमेर, के. एस. त्रिवेदी- पाली तथा गोविंद गोयल श्रीगंगानगर का विशेष सहयोग भी उल्लेखनीय रहा है। सभी ने संगठन की अवधारणा को मूर्त रूप देने, पत्रकारों से संवाद स्थापित करने तथा संगठन को प्रदेशव्यापी स्वरूप देने में सक्रिय योगदान दिया है। प्रारंभिक चरण में ही संगठन के आधिकारिक संवाद समूह से प्रदेश के विभिन्न जिलों के 170 से अधिक अधिस्वीकृत पत्रकार जुड़ चुके हैं। यह संख्या निरंतर बढ़ रही है, जिससे अधिस्वीकृत पत्रकारों में संगठन के प्रति उत्साह एवं विश्वास स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। संयोजक डा. अखिल बंसल ने बताया कि शीघ्र ही प्रदेशव्यापी सदस्यता अभियान प्रारंभ किया जाएगा। इसके बाद केंद्रीय कार्यकारिणी का गठन, संभागीय एवं जिला संयोजकों की नियुक्ति तथा संगठन की जिला इकाइयों का विस्तार किया जाएगा, ताकि प्रत्येक जिले में अधिस्वीकृत पत्रकारों को प्रभावी प्रतिनिधित्व मिल सके। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में पत्रकारों के समक्ष सुरक्षा, सम्मान, व्यावसायिक अधिकारों, सामाजिक संरक्षण तथा संवाद से जुड़ी अनेक चुनौतियाँ हैं। ऐसे समय में एक संगठित एवं उत्तरदायी मंच की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी। राजस्थान अधिस्वीकृत पत्रकार संघ पत्रकारों के हितों की रक्षा, उनके अधिकारों के संरक्षण, व्यावसायिक उन्नयन, प्रशिक्षण, पारस्परिक सहयोग तथा शासन-प्रशासन के समक्ष उनकी समस्याओं के प्रभावी समाधान के लिए समर्पित रहेगा। संगठन का उद्देश्य पत्रकारों को एकजुट कर उनकी गरिमा, स्वतंत्रता और सामाजिक प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करना है।

श्री वर्द्धमान कन्या महाविद्यालय में नवप्रवेशित छात्राओं हेतु ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित

ब्यावर. शाबाश इंडिया

श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति द्वारा संचालित श्री वर्द्धमान कन्या महाविद्यालय में नवप्रवेशित छात्राओं के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं को महाविद्यालय की कार्यप्रणाली, शैक्षणिक वातावरण, अनुशासन, नियमों तथा संस्थान के मूल्यों से परिचित कराना था, ताकि वे अपने नए शैक्षणिक जीवन की शुरूआत आत्मविश्वास एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ कर सकें। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं को महाविद्यालय में संचालित विभिन्न गतिविधियों एवं प्रकोष्ठों की विस्तृत जानकारी दी गई। उन्हें एनसीसी , एनएसएस , रेड रिबन क्लब, खेल गतिविधियों, सांस्कृतिक मंच झंकारर, एंटी रैगिंग क्लब, स्कालरशिप, समाज कल्याण विभाग, मुख्यमंत्री छात्रवृति योजना सहित विभिन्न सह-पाठ्यक्रम एवं व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों से अवगत कराया गया। साथ ही महाविद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था, परीक्षा प्रणाली, अनुशासन, छात्रा कल्याण योजनाओं एवं उपलब्ध सुविधाओं की भी जानकारी प्रदान की गई। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.सी. लोढ़ा ने अपने संबोधन में कहा कि महाविद्यालय मात्र डिग्री प्राप्त करने का केंद्र नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और जीवन मूल्यों को विकसित करने का सशक्त मंच है। छात्राएँ शिक्षा के साथ-साथ एनसीसी, एनएसएस, खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी कर अपने सर्वांगीण विकास की दिशा में आगे बढ़ें तथा अपने परिवार, समाज और राष्ट्र का गौरव बढ़ाएं। कार्यक्रम में वर्द्धमान शिक्षण समिति के मंत्री डॉ. नरेन्द्र पारख ने नवप्रवेशित छात्राओं को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि हमारा उद्देश्य केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना ही नहीं, बल्कि संस्कार, नैतिक मूल्यों और आत्मविश्वास से परिपूर्ण

नागरिक तैयार करना है। छात्राएँ महाविद्यालय द्वारा उपलब्ध प्रत्येक अवसर का लाभ उठाएँ, अपने कौशल का विकास करें तथा जीवन में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त करें। कार्यक्रम के अंत में छात्राओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया तथा उन्हें महाविद्यालय परिवार की ओर से उज्ज्वल एवं सफल शैक्षणिक जीवन के लिए शुभकामनाएँ दी गईं।

श्री गीतागोपाल नाट्यकला संस्थान, चौमूं में मुंशी प्रेमचंद की 146वीं जयंती श्रद्धापूर्वक मनाई गई

चौमूं. शाबाश इंडिया। श्री गीतागोपाल नाट्यकला संस्थान, चौमूं के तत्वावधान में संस्थान कार्यालय पर हिंदी साहित्य के महान कथाकार, उपन्यास सम्राट एवं कलम के जादूगर मुंशी प्रेमचंद की 146वीं जयंती श्रद्धा एवं सम्मान के साथ मनाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के अध्यक्ष एवं रंगमंच कलाकार सुनील सोगण तथा संस्थान के सचिव घनश्याम जांगिड़ द्वारा मुंशी प्रेमचंद के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष सुनील सोगण ने मुंशी प्रेमचंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान समय में उनकी जयंती मनाना तभी सार्थक होगा, जब हम उनके विचारों, आदर्शों और मानवीय मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात करें। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक समानता, मानवीय संवेदना, न्याय और नैतिकता का सशक्त संदेश देता है, जो आज भी पूरी तरह प्रासंगिक है। संस्थान के सचिव घनश्याम जांगिड़ ने कहा कि आज के युवाओं और बच्चों को मुंशी प्रेमचंद की कहानियों एवं उपन्यासों से प्रेरणा लेकर समाज और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से निर्वहन करना चाहिए। उनका साहित्य नई पीढ़ी में नैतिक मूल्यों, सामाजिक चेतना और राष्ट्रसेवा की भावना विकसित करता है। इस अवसर पर एडवोकेट शिवकांत शर्मा ने मुंशी प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों का मर्म समझाते हुए कहा कि उनकी रचनाएँ केवल साहित्य नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाने वाली अमूल्य धरोहर हैं। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य हमें सत्य, ईमानदारी, करुणा, सामाजिक न्याय और मानवता का संदेश देता है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी सदस्यों ने मुंशी प्रेमचंद के आदर्शों पर चलने तथा साहित्य के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का संकल्प लिया।

धर्म ही जीवन का प्रकाश है, जो आत्मा को अज्ञान के अंधकार से मुक्त करता है: आचार्यश्री उदारसागर

मुरैना (मनोज जैन नायक) जैनाचार्य अभिनंदनसागरजी महाराज के परम प्रभावक आज्ञानुवर्ती शिष्य, परम पूज्य आचार्यश्री उदारसागरजी महाराज ने बड़े जैन मंदिर में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि ''जब-जब अधर्म बढ़ता है, तब-तब धर्म का प्रकाश मानवता का मार्गदर्शन करने के लिए प्रकट होता है।'' संसार में अंधकार का अस्तित्व केवल प्रकाश के अभाव से होता है। उसी प्रकार जीवन में अशांति, हिंसा, मोह, लोभ, क्रोध, अहंकार और अनैतिकता का विस्तार धर्म के अभाव का परिणाम है। धर्म कोई संप्रदाय या बाहरी आडंबर नहीं, बल्कि आत्मा को उसके शुद्ध स्वरूप का बोध कराने वाली दिव्य साधना है। आचार्यश्री ने कहा कि जिस प्रकार एक छोटा-सा दीपक भी घोर अंधकार को दूर करने की क्षमता रखता है, उसी प्रकार धर्म का एक छोटा-सा संस्कार भी मनुष्य के जीवन को नई दिशा दे सकता है। धर्म मनुष्य को सत्य, अहिंसा, क्षमा, दया, करुणा, संयम और आत्मानुशासन का मार्ग सिखाता है। जहां धर्म है, वहां सद्भाव है; जहां धर्म है, वहां शांति है; और जहां धर्म है, वहां आत्मकल्याण का मार्ग स्वतः प्रशस्त हो जाता है । उन्होंने कहा कि आज संसार में भौतिक साधनों की कोई कमी नहीं है, लेकिन मानसिक शांति का अभाव बढ़ता जा रहा है। मनुष्य ने विज्ञान के माध्यम से बाहरी संसार को जीतने का प्रयास तो किया, किंतु अपने मन को जीतने का प्रयास नहीं किया। जैन दर्शन कहता है कि सबसे बड़ी विजय किसी दूसरे पर नहीं, बल्कि अपने राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया और लोभ पर विजय प्राप्त करना है। यही वास्तविक धर्म है और यही आत्मविजय है।

धर्म क्यों और कब तक करना चाहिए

आचार्यश्री ने एक अत्यंत प्रेरणादायक दृष्टांत सुनाया। उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति ने एक संत से प्रश्न किया ''धर्म क्यों करना चाहिए और कब तक करना चाहिए?'' संत ने तत्काल उत्तर देने के स्थान पर उसे रात्रि में अपनी कुटिया पर आने के लिए कहा। रात्रि होने पर वह व्यक्ति संत की कुटिया में पहुंचा। वहां एक दीपक जल रहा था। उस व्यक्ति ने संत से पूछा, ''गुरुदेव ! यह दीपक क्यों जल रहा है ?'' संत ने मुस्कराते हुए कहा, अंधकार है, इसलिए दीपक जल रहा है। उस व्यक्ति ने पुनः प्रश्न किया, यह दीपक कब तक जलता रहेगा ? संत ने उत्तर दिया, जब तक अंधकार रहेगा, तब तक दीपक जलता रहेगा।

बालिका शिक्षा सदन और मुरारी लाल मेहता विद्या मंदिर के 75 वर्ष पूरे, भव्य कार्यक्रम आयोजित

विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किए सांस्कृतिक कार्यक्रम, वक्ताओं ने शिक्षा के साथ कौशल विकास पर दिया जोर

कोलकाता. शाबाश इंडिया। बालिका शिक्षा सदन और मुरारी लाल मेहता विद्या मंदिर के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में महाजाति सदन में भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन के चेयरमैन डॉ. अनिर्बान गांगुली ने कहा कि जिस तरह भारत विकास की ओर बढ़ रहा है, उसी तरह यह विद्यालय भी निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। डॉ. गांगुली ने कहा कि आज का रोजगार बाजार तेजी से बदल रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन और नई तकनीकों ने कार्यस्थलों की प्रकृति बदल दी है। ऐसे समय में केवल डिग्री पर्याप्त नहीं है। रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, अनुकूलन क्षमता और आजीवन सीखने की प्रवृत्ति जैसी विशेषताएं ही भविष्य में सफलता की कुंजी हैं। कार्यक्रम में उपस्थित संजय चट्टोपाध्याय ने कहा कि यह गर्व का विषय है कि विद्यालय अपना 75वां वर्ष मना रहा है और अधिक गौरव का अवसर तब होगा, जब यह विद्यालय अपने 100 वर्ष पूर्ण करेगा। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि जीवन में प्रत्येक विद्यार्थी कभी न कभी असफलता का सामना करता है। किसी परीक्षा में अपेक्षित अंक नहीं मिलते, किसी प्रतियोगिता में हार का सामना करना पड़ता है या नौकरी और इंटर्नशिप के लिए आवेदन अस्वीकार हो जाता है। ऐसे अनुभव ही धैर्य, आत्मविश्लेषण और निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा देते हैं। जो विद्यार्थी असफलता से सीखना जानते हैं, वे जीवन में अधिक मजबूत और सफल बनते हैं। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। आयोजन को सफल बनाने में बालिका शिक्षा सदन की प्रधानाध्यापिका मधुमिता दत्ता, मुरारी लाल मेहता विद्या मंदिर की प्रधानाध्यापिका दीपा दास गुप्ता, मंत्री अजय काजरिया, सभापति ओ. पी. कानोडिया एवं अखिलेश काजरिया का विशेष योगदान रहा।

प्रदीप कुमार धानुक
स्वतंत्र पत्रकार व कवि
मोबाइल : 74398-82266

सेवानिवृत्ति पर नरेंद्र जैन और श्रीप्रकाश शर्मा का किया अभिनंदन

वेस्ट सेंट्रल रेलवे एम्प्लाइज यूनियन ने किया सम्मान, वक्ताओं ने सेवाओं और कर्मचारी हित में योगदान को सराहा

गंगापुर सिटी. शाबाश इंडिया। वेस्ट सेंट्रल रेलवे एम्प्लाइज यूनियन, गंगापुर सिटी की ओर से यूनियन कार्यालय में आयोजित अभिनंदन समारोह में रेल सेवा से सेवानिवृत्त हो रहे यूनियन के मंडल उपाध्यक्ष कामरेड नरेंद्र जैन तथा मुख्य कर्षण क्रू नियंत्रक एवं मंडल सह सचिव कामरेड श्रीप्रकाश शर्मा का सम्मान किया गया। समारोह में रेलवे अधिकारी, कर्मचारी, सेवानिवृत्त रेलकर्मी, यूनियन पदाधिकारी, विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि एवं शुभचिंतक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों के स्वागत एवं पुष्पगुच्छ भेंट करने के साथ हुआ। इसके बाद दोनों वरिष्ठ रेलकर्मियों का साफा पहनाकर, माल्यार्पण कर, शॉल ओढ़ाकर एवं स्मृति-चिह्न भेंट कर अभिनंदन किया गया। वक्ताओं ने कहा कि नरेंद्र जैन ने करीब 39 वर्ष 2 माह की रेल सेवा के दौरान ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा एवं अनुशासन के साथ कार्य किया। उन्होंने रेल कर्मचारियों के अधिकारों की रक्षा, संगठन को सशक्त बनाने तथा कर्मचारियों की समस्याओं के समाधान के लिए लगातार कार्य किया। वर्ष 1990 से रेलवे कर्मचारियों के साथ असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के अधिकारों की आवाज उठाते हुए विभिन्न कर्मचारी हित एवं जनहित आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। सामाजिक क्षेत्र में भी उनका योगदान रहा। दिगंबर जैन सोशल ग्रुप सहित विभिन्न सामाजिक, धार्मिक एवं सेवा गतिविधियों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही है। वक्ताओं ने मंडल सह सचिव श्रीप्रकाश शर्मा की सेवाओं की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने अपने सेवाकाल में मुख्य कर्षण क्रू नियंत्रक के रूप में जिम्मेदारी, दक्षता एवं समर्पण के साथ कार्य किया। उनका सरल एवं सहयोगी व्यवहार कर्मचारियों के बीच हमेशा सम्मान का विषय रहा। उन्होंने रेलवे की सुरक्षित एवं सुचारु संचालन व्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया। समारोह में वक्ताओं ने दोनों वरिष्ठ रेलकर्मियों के साथ बिताए संस्मरण भी साझा किए। उन्होंने कहा कि उनकी कार्यशैली, संघर्षशीलता, नेतृत्व क्षमता एवं मानवीय संवेदनाएं नई पीढ़ी के कर्मचारियों के लिए प्रेरणास्रोत रहेंगी। सेवानिवृत्ति सेवा का अंत नहीं, बल्कि जीवन के नए अध्याय की शुरूआत है।

पदाधिकारियों ने दी शुभकामनाएं

इस अवसर पर यूनियन के वरिष्ठ एवं सेवानिवृत्त पदाधिकारी पी. एन. सारस्वत, इमामुद्दीन खान, दलजीत राजावत, श्यामलाल गुर्जर, कौशल किशोर, शाखा अध्यक्ष गजानंद शर्मा, मंडल उपाध्यक्ष हरिप्रसाद मीणा, मंडल सह सचिव राजूलाल गुर्जर, रघुराज सिंह, नदीम खान, घनश्याम मीना, शरीफ, बाबूलाल योगी, पुखराज, सुरेश गुर्जर, हरिमोहन गुर्जर, कैलाश जोगी, विकास चतुर्वेदी, सुमेर जैन सोनी, सुभाष जैन सोगानी, अरविंद उपाध्याय, मनमोहन शर्मा, योगेंद्र शर्मा एवं सोमेंद्र सिंह सहित अनेक पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने दोनों का अभिनंदन कर स्वस्थ एवं सुखमय जीवन की शुभकामनाएं दीं। कामरेड नरेंद्र जैन ने रेल सेवा के दौरान मिले सहयोग के लिए अधिकारियों, सहकर्मियों, यूनियन पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार जताया। उन्होंने कहा कि संगठन ने उन्हें हमेशा सम्मान, विश्वास और कर्मचारी हित में कार्य करने की शक्ति दी। श्रीप्रकाश शर्मा ने भी सभी साथियों के स्नेह, सम्मान एवं सहयोग के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि रेल परिवार के साथ बिताए वर्षों की स्मृतियां उनके जीवन की अमूल्य धरोहर रहेंगी। कार्यक्रम के अंत में दोनों सेवानिवृत्त रेलकर्मियों के साथ सामूहिक छायाचित्र लिया गया तथा उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की कामना की गई। यूनियन की ओर से सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया गया।

महल योजना के मुनिसुव्रतनाथ जैन मंदिर में भक्तिभाव से मनाया गर्भ कल्याणक

अभिषेक, शांतिधारा और विशेष पूजा-अर्चना के साथ श्रद्धालुओं ने अर्पित किए अष्टद्रव्य

जयपुर. शाबाश इंडिया। जगतपुरा की महल योजना स्थित श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन मंदिर में जैन धर्म के 20वें तीर्थंकर एवं मंदिर के मूलनायक देवाधिदेव श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का पावन गर्भ कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास और भक्तिभाव से मनाया गया। समन्वयक अभिषेक सांघी ने बताया कि महोत्सव का शुभारंभ प्रातःकाल भगवान के अभिषेक, शांतिधारा एवं विशेष पूजा-अर्चना के साथ हुआ। श्रद्धालुओं ने भजनों के बीच अष्टद्रव्य अर्पित कर भगवान मुनिसुव्रतनाथ के गर्भ कल्याणक की मंगल आराधना की। इस दौरान भगवान के जयकारों से संपूर्ण मंदिर परिसर गुंजायमान हो उठा। धार्मिक आयोजन में मंदिर प्रबंधन समिति के मंत्री शिव पिंकल जैन, अनूप सुलोचना, डॉ. राकेश, रूपेश दीपक बोहरा, हेमंत ज्योति काला, नेम इंदु कोडिवाल सहित समाज के अनेक गणमान्यजन एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे।

दुर्गापुरा गौशाला में किया पौधरोपण, गौ-चारा भी किया वितरित

भारतीय जैन मिलन जिला जयपुर का सेवा प्रकल्प, सदस्यों ने लिया पौधों के संरक्षण का संकल्प

जयपुर. शाबाश इंडिया। भारतीय जैन मिलन, जिला जयपुर के तत्वावधान में दुर्गापुरा गौशाला में वृहद पौधरोपण एवं गौ-चारा वितरण का सेवा प्रकल्प उत्साह और सेवा भावना के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण, हरित भविष्य के निर्माण तथा प्रकृति के प्रति जन-जागरूकता को बढ़ावा देना रहा। सदस्यों ने विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाकर उनके संरक्षण का भी संकल्प लिया। इस अवसर पर गौमाता के लिए चारा वितरित कर सेवा, करुणा एवं जीवदया का संदेश दिया गया। उपस्थित सदस्यों ने प्रकृति संरक्षण और गौसेवा को समाज की साझा जिम्मेदारी बताते हुए अधिक से अधिक पौधे लगाने का आह्वान किया। वीर अनिल जैन ने कहा कि आज लगाया गया प्रत्येक पौधा आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ वायु, हरियाली और स्वस्थ जीवन का आधार बनेगा। पर्यावरण संरक्षण केवल एक अभियान नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है। उन्होंने कहा कि भारतीय जैन मिलन, जिला जयपुर समाजहित, पर्यावरण संरक्षण एवं सेवा कार्यों के लिए निरंतर सक्रिय है। कार्यक्रम में सदस्यों ने अधिकाधिक पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण की मुहिम को जन-जन तक पहुंचाने तथा भविष्य में भी ऐसे सेवा प्रकल्पों में सक्रिय भागीदारी निभाने का संकल्प लिया। अंत में वीर अनिल जैन ने सभी सदस्यों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि एक पौधा, एक संकल्प और एक प्रयास से ही हरित एवं समृद्ध भारत के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

अहार जी में धूमधाम से हुई चातुर्मास मंगल कलश की स्थापना

आचार्य विवेक सागर महाराज ने कहा आत्मशुद्धि और साधना का स्वर्णिम अवसर है चातुर्मास

लार. शाबाश इंडिया। बुंदेलखंड के प्रसिद्ध श्री 1008 दिगंबर जैन सिद्ध क्षेत्र अहार जी में छोटी परंपरा के सप्तम पट्टाधीश राष्ट्रसंत आचार्य श्री विवेक सागर जी महाराज ससंघ का चातुर्मास मंगल कलश स्थापना समारोह भक्ति भाव से आयोजित किया गया। आयोजन सिद्ध क्षेत्र अहार जी कमेटी एवं सकल दिगंबर जैन समाज के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। कार्यक्रम का संचालन पंडित चक्रेश शास्त्री सोजना ने किया। आचार्य सुमति सागर महाराज के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन के बाद क्षेत्र कमेटी एवं समाज की ओर से आचार्य विवेक सागर महाराज ससंघ को श्रीफल भेंट किया गया। इसके बाद पाद प्रक्षालन, शास्त्र भेंट एवं अष्ट द्रव्य से पूजन कर अर्घ्य समर्पित किए गए। धर्मसभा में आचार्य विवेक सागर महाराज ने कहा कि चातुर्मास केवल परंपरा नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, संयम और साधना का स्वर्णिम अवसर है। अपने भीतर के कलश को ज्ञान और वैराग्य के जल से भरना ही सच्ची कलश स्थापना है। चातुर्मास मंगल कलश स्थापना का सौभाग्य अशोक जैन, जिनेंद्र जैन, रमेश कुमार जैन, नाथूराम जैन, डॉ. फेरनलाल एवं प्रकाश जैन को मिला। इस दौरान महेंद्र सिंघई, राजकुमार पठा, अजित वैसा, दिनेश लार, सुभाष करेया, वीरेंद्र सपोंन, महेंद्र डिकोली एवं मुकेश जैन लार सहित श्रद्धालु मौजूद रहे। – **मुकेश जैन लार**

हर्षोल्लास से मनाया भगवान मुनिसुव्रतनाथ का गर्भ कल्याणक महोत्सव

अभिषेक, शांतिधारा और पूजन कर चढ़ाया सामूहिक अर्घ्य, सुख-समृद्धि की कामना

फागी. शाबाश इंडिया। कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाड़ा, चोरू, नारेड़ा, मंडावरी, मेहंदवास, निमेड़ा, लसाड़िया और लदाना के जिनालयों में जैन धर्म के 20वें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ का गर्भ कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने बताया कि कस्बे के मुनिसुव्रतनाथ जिनालय में प्रातः श्रीजी का अभिषेक किया गया। इसके बाद समाज की ओर से सामूहिक शांतिधारा की गई और अष्टद्रव्यों से पूजा-अर्चना कर भगवान मुनिसुव्रतनाथ के गर्भ कल्याणक का सामूहिक अर्घ्य चढ़ाया गया। श्रद्धालुओं ने जयकारों के बीच सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की। महिला मंडल की गुणमाला झंडा एवं इलायची मोदी ने बताया कि भगवान मुनिसुव्रतनाथ का जन्म राजगृह नगर में राजा सुमित्र और रानी पद्मावती के यहां हुआ था। जैन मान्यताओं के अनुसार उनके शासनकाल में रामायण से जुड़ी घटनाएं घटित हुईं और इसी काल में आठवें बलभद्र पद्म (राम) का जन्म हुआ। गजराज को देखकर उन्हें जातिस्मरण ज्ञान हुआ और संसार से विरक्त होकर उन्होंने दीक्षा ग्रहण की। लंबी साधना के बाद केवलज्ञान प्राप्त किया और सम्मेद शिखर से निर्वाण प्राप्त किया।

दिगम्बर जैन महासमिति महिलांचल राजस्थान का 11वां मासिक अभिषेक एवं पूजन विधान संपन्न

शांतिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में श्रद्धा और भक्तिभाव से हुआ धार्मिक आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगम्बर जैन महासमिति महिलांचल राजस्थान की ओर से 11वां मासिक अभिषेक, पूजन एवं विधान कार्यक्रम श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय, गोटे वाला मंदिर में श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक उल्लास के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम महिलांचल अध्यक्षा शकुन्तला बिंदायका के नेतृत्व में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मंत्री सुनीता गंगवाल, कोषाध्यक्ष उर्मिला जैन, अनीता जैन, मधु जैन, सुलोचना जैन, रानी बोहरा एवं संजना जैन सहित अनेक पदाधिकारी और सदस्य उपस्थित रहे। पूजन विधान के संरक्षक प्रेमचंद बाकलीवाल एवं निशा शाह के सहयोग तथा पुण्यार्जक परिवार प्रमोद पाटनी-राजकुमारी पाटनी, अमित पाटनी, आलोक पाटनी एवं अधिवक्ता अंकुर-करिश्मा पाटनी के पुण्य संकल्प से आयोजन संपन्न हुआ। समाज की ओर से पुण्यार्जक परिवार का अभिनंदन कर मंगलकामनाएं व्यक्त की गईं। कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक राजेश बड़जात्या एवं सीमा बड़जात्या रहे। इस अवसर पर शाबाश इंडिया के संपादक राकेश गोदिका, नवकार ग्रुप के अध्यक्ष मोहनलाल गंगवाल, पंडित रमेश गंगवाल, पंडित दीपक, सम्यक ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष महावीर बिंदायका, लश्कर पटौदी महिला मंडल की अध्यक्षा मधु हाड़ा, सपना जैन, इंदिरा जैन, सुलोचना चांदवाड़ एवं मैना जैन सहित गणमान्यजन उपस्थित रहे। दिगम्बर जैन महासमिति महिलांचल राजस्थान की अध्यक्ष शकुन्तला बिंदायका ने सभी अतिथियों, सहयोगियों, पुण्यार्जक परिवार एवं

सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चलने का लिया संकल्प

देहरा तिजारा में श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाई वीर शासन जयंती

देहरा तिजारा. शाबाश इंडिया। श्री 1008 चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, देहरा तिजारा में भावलिंगी संत श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज ससंघ (31 पिच्छी) के 31वें चातुर्मास के दौरान वीर शासन जयंती श्रद्धा और भक्तिभाव से मनाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्यश्री के पाद प्रक्षालन से हुआ। इसके बाद श्रद्धालुओं ने शास्त्र भेंट कर विधि-विधान से पूजन-अर्चना की। मंदिर अध्यक्ष मुकेश जैन एवं प्रचार मंत्री उमंग जैन ने बताया कि आचार्यश्री ने मंगल प्रवचन में कहा कि वीर शासन केवल पर्व नहीं, बल्कि जीवन जीने की श्रेष्ठ कला है। भगवान महावीर का शासन प्रत्येक जीव को आत्मशांति, समता और मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर करता है। वीर शासन प्रेम, अहिंसा, दया और करुणा का शासन है, जो ''जियो और जीने दो'' के सिद्धांत पर आधारित है। उन्होंने कहा कि अहिंसा, सत्य, क्षमा, अपरिग्रह, संयम और मैत्रीभाव को जीवन में उतारना ही वीर शासन का वास्तविक पालन है। धर्म केवल मंदिरों तक सीमित न रहकर विचारों, व्यवहार और आचरण में भी दिखाई देना चाहिए। प्रवचन के बाद श्रद्धालुओं ने भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चलने का सामूहिक संकल्प लिया। इस अवसर पर नरेंद्र जैन, शिम्भू जैन, सुरेश जैन, रवि जैन, राजेश जैन, पारस जैन, सुरेंद्र जैन, मनोज जैन एवं संयम जैन सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

वात्सल्य सेवा समिति ने मनाई भगवान महावीर की वीर शासन जयंती, पौधारोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

आगरा. शाबाश इंडिया। वात्सल्य सेवा समिति द्वारा गुरुवार को शाहगंज के अलवतिया रोड स्थित बालजीपुरम में भगवान महावीर की वीर शासन जयंती श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान महावीर के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पूजन-अर्चन से हुआ। इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने भगवान महावीर के गुणों का सामूहिक गान कर उनके अहिंसा करुणा,सत्य और जीवदया के संदेश को आत्मसात करने का संकल्प लिया। भक्तिमय वातावरण में महावीर स्वामी की महिमा का गुणगान करते हुए सभी ने धर्म और सेवा के मार्ग पर चलने का आह्वान किया। धार्मिक आयोजन के उपरांत वात्सल्य सेवा समिति द्वारा पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।समिति के पदा धिकारियों एवं सदस्यों ने विभिन्न प्रकार के छायादार एवं फलदार पौधे रोपित कर उनके संरक्षण का भी संकल्प लिया। वक्ताओं ने कहा कि वृक्षारोपण केवल पर्यावरण की रक्षा का माध्यम नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी भी है। समिति अध्यक्ष रश्मि जैन ने सभी उपस्थित जनों का आभार व्यक्त करते हुए अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनकी नियमित देखभाल करने का संदेश दिया।

मुरलीपुरा जैन मंदिर में पहली बार होगा ''वात्सल्य चातुर्मास'' का आयोजन

2 अगस्त को आर्यिका सुकाव्यमति माताजी ससंघ के सान्निध्य में होगा मंगल कलश स्थापना महोत्सव

जयपुर. शाबाश इंडिया। राजधानी के मुरलीपुरा स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में पहली बार राष्ट्रसंत आचार्य 108 श्री सुंदर सागर जी महाराज की शिष्या आर्यिका 105 श्री सुकाव्यमति माताजी ससंघ एवं क्षुल्लिका श्री सुज्ञप्तिमति माताजी के सान्निध्य में 2 अगस्त को ''वात्सल्य चातुर्मास-2026'' मंगल कलश स्थापना महोत्सव श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ आयोजित किया जाएगा। आयोजन में जयपुर सहित प्रदेशभर से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है। आयोजन समिति ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 7:15 बजे श्रीजी के अभिषेक एवं शांतिधारा से होगा। इसके बाद आचार्य चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन, आर्यिका सुकाव्यमति माताजी का पाद प्रक्षालन तथा आर्यिका संघ को शास्त्र भेंट सहित विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान होंगे। प्रमुख धार्मिक क्रियाएं परंपरानुसार बोली के माध्यम से संपन्न कराई जाएंगी। प्रातः 9:15 बजे आर्यिका संघ की आहारचर्या होगी, जबकि 11:15 बजे से संगीतमय वातावरण में वात्सल्य चातुर्मास मंगल कलश स्थापना महोत्सव शुरू होगा। इस अवसर पर 1008 श्री महावीर कलश सहित पूर्वाचार्यों का कलश, 108 श्री विमल सागर जी कलश, 108 श्री सन्मति सागर जी कलश, 108 श्री सुंदर सागर कलश तथा मां जिनवाणी कलश की स्थापना बोली के माध्यम से की जाएगी। साथ ही 24 रिद्धि-सिद्धि कलश एवं 500 रुपए प्रति कूपन के माध्यम से सौभाग्य कलश भी रखे जाएंगे। कार्यक्रम का संचालन मंच मार्तण्ड एवं वाणी भूषण बा. ब्र. आशीष भैया पुण्यांश, भोपाल करेंगे। वहीं बा. ब्र. झिलमिल दीदी का भी सान्निध्य प्राप्त होगा। आयोजन में जयपुर के बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए आवास की व्यवस्था की गई है। सायं 4 बजे से श्याम वाटिका, माताजी मंदिर रोड, केडिया चौराहा, मुरलीपुरा में वात्सल्य भोज का आयोजन होगा। आयोजन समिति ने जैन समाज एवं धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं से परिवार सहित अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्मलाभ लेने का आह्वान किया है। समिति के अनुसार वात्सल्य चातुर्मास के माध्यम से संयम, संस्कार, श्रद्धा और वात्सल्य के साथ धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना का संदेश दिया जाएगा।

अमेरिका में गूंजा बोराव की बेटी एकता जैन की प्रतिभा का परचम

फिलाडेल्फिया में अंतरराष्ट्रीय गणित सम्मेलन में प्रस्तुत किया शोध व्याख्यान, क्षेत्र और जैन समाज में खुशी

बोराव/रामगंजमंडी. शाबाश इंडिया

राजस्थान के छोटे से कस्बे बोराव की बेटी एकता जैन ने अमेरिका के फिलाडेल्फिया में आयोजित अंतरराष्ट्रीय गणित सम्मेलन में अपना शोध व्याख्यान प्रस्तुत कर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। उनकी उपलब्धि पर जैन समाज सहित क्षेत्रवासियों ने खुशी जताते हुए उन्हें बधाई दी है। जानकारी के अनुसार 23 से 30 जुलाई तक आयोजित सम्मेलन में विभिन्न देशों के गणितज्ञों एवं शोधार्थियों ने भाग लिया। एकता जैन ने भी सम्मेलन में गणित विषय से संबंधित अपना शोध प्रस्तुत किया और विशेषज्ञों के समक्ष अपने शोध कार्य की जानकारी दी। एकता वर्तमान में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, सूरत से गणित विषय में पीएचडी कर रही हैं। अमेरिका में अंतरराष्ट्रीय स्तर के मंच पर शोध प्रस्तुत करने की उनकी उपलब्धि से परिवार और क्षेत्र में खुशी का माहौल है। एकता के पिता पारस कुमार जैन महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, श्रीपुरा में अध्यापक हैं, जबकि माता शशि जैन गृहिणी हैं। परिवार सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों में भी सक्रिय है। वर्ष 2016 में बिजोलिया में आयोजित आचार्य प्रणम्य सागर महाराज के वर्षायोग के दौरान उनके माता-पिता को गुरुदेव की पुरानी पिच्छिका प्राप्त करने का सौभाग्य मिला था। परिवार का वर्तमान निवास स्वामी विवेकानंद नगर, कोटा में है। एकता की छोटी बहन अनमोल जैन ने महाराष्ट्र के राजकीय महाविद्यालय से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की है, जबकि भाई अतिशय जैन भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की में कंप्यूटर साइंस की पढ़ाई कर रहे हैं। एकता की उपलब्धि पर बोराव के सरपंच अनुराग जैन ने प्रसन्नता जताते हुए कहा कि यह पूरे क्षेत्र के लिए गर्व का विषय है। उन्होंने एकता की मेहनत, प्रतिभा और समर्पण की सराहना करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। क्षेत्रवासियों ने कहा कि एकता की उपलब्धि उच्च शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में आगे बढ़ने वाले विद्यार्थियों, विशेषकर छात्राओं के लिए प्रेरणादायी है।

रिपोर्ट : अभिषेक जैन लुहाड़िया, रामगंजमंडी
मोबाइल : 9929747312

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नसीराबाद में मनाई मुंशी प्रेमचंद जयंती

नसीराबाद. शाबाश इंडिया। पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नसीराबाद में शिक्षण क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी साहित्य के महान कथाकार एवं उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती

श्रद्धापूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम विद्यालय के प्राचार्य रमेश चंद्र मीणा की अध्यक्षता एवं मुख्य अतिथि राजस्थान कॉलेज शिक्षा सेवा के पूर्व सह आचार्य डॉ. भेरूलाल गर्ग के सान्निध्य में हुआ। मुख्य वक्ता डॉ. भेरूलाल गर्ग ने मुंशी प्रेमचंद के व्यक्तित्व, कृतित्व और यथार्थवादी लेखन शैली पर प्रकाश डालते हुए उनके साहित्य में निहित सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदनाओं एवं नैतिक मूल्यों की जानकारी दी। उन्होंने विद्यार्थियों से प्रेमचंद के साहित्य से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। प्रार्थना सभा में विद्यार्थियों ने प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों, उपन्यासों एवं अन्य रचनाओं का परिचय प्रस्तुत किया। साथ ही उनकी कृतियों की समीक्षा करते हुए सामाजिक एवं नैतिक संदेशों को साझा किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नीरज दईया, पीजीटी हिंदी ने किया। अंत में प्राचार्य रमेश चंद्र मीणा ने अतिथि एवं प्रतिभागियों का आभार जताते हुए कहा कि ऐसे साहित्यिक आयोजन विद्यार्थियों में भाषा, साहित्य और मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करते हैं। – **रोहित जैन**

रोटरी क्लब वाराणसी सेंट्रल ने माताओं व नवजात शिशुओं को बांटी पोषण किट

पंडित दीनदयाल उपाध्याय चिकित्सालय में कार्यक्रम, मातृ-शिशु स्वास्थ्य और देखभाल के प्रति किया जागरूक

वाराणसी. शाबाश इंडिया। रोटरी क्लब वाराणसी सेंट्रल की ओर से रोटरी वर्ष 2026-27 के अंतर्गत पांडेयपुर स्थित पंडित दीनदयाल उपाध्याय चिकित्सालय में ''मातृत्व पोषण तथा नवजात शिशु किट वितरण'' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य नवप्रसूता माताओं एवं नवजात शिशुओं के स्वास्थ्य, पोषण और बेहतर देखभाल को बढ़ावा देने के साथ जरूरतमंद परिवारों को आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराना था। कार्यक्रम में नवप्रसूता माताओं को पोषण सामग्री तथा नवजात शिशुओं के लिए उपयोगी बेबी केयर किट वितरित की गईं। माताओं को प्रसव के बाद पौष्टिक आहार, शिशु की स्वच्छता, उचित देखभाल एवं स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक सावधानियों की जानकारी भी दी गई। मुख्य अतिथि चिकित्सालय के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. कौशल कुमार सिंह ने पहल की सराहना करते हुए कहा कि मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य स्वस्थ समाज की आधारशिला है। ऐसे सेवा कार्य जरूरतमंद परिवारों की सहायता के साथ स्वास्थ्य और पोषण के प्रति जागरूकता भी बढ़ाते हैं। क्लब अध्यक्ष डॉ. रितु गर्ग ने कहा कि स्वस्थ मां ही स्वस्थ बच्चे और स्वस्थ समाज की नींव रखती है। क्लब भविष्य में भी मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य से जुड़े सेवा कार्यक्रम आयोजित करता रहेगा। कार्यक्रम में अलका गुप्ता, किरण मिश्रा, दीप्ति सिंह, सी.पी. सिंह, सुनील मिश्रा, डॉ. प्रेम प्रकाश, डॉ. आरती दिव्य, डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. सुप्रिया, डॉ. दीपिका, सचिव ललित गुप्ता, कोषाध्यक्ष रवि सिंह एवं राम मोहन अग्रवाल सहित अन्य लोग उपस्थित रहे। अंत में ज्ञानेंद्र उपाध्याय ने धन्यवाद ज्ञापित किया। – **संतोष कुमार सिंह**

पुष्पगिरी तीर्थ पर मनाई वीर शासन जयंती

अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर के 9 निर्जलाहार उपवास के बाद हुआ पारणा

पुष्पगिरी सोनकच्छ. शाबाश इंडिया। पुष्पगिरी तीर्थ पर गणाचार्य पुष्पदंत सागर महाराज के सान्निध्य में वीर शासन जयंती श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई गई। प्रातः दिव्य मंगल पाठ, स्वाध्याय एवं श्रीजी के अभिषेक-शांतिधारा के बाद विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम हुए। अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज ने धर्मसभा में कहा कि इसी दिन विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर स्वामी की 66 दिन बाद दिव्य देशना हुई थी, जहां राजा श्रेणिक ने भगवान से 60 हजार प्रश्न किए थे। भगवान ने कहा कि जो अपने ज्ञान को बढ़ाते हुए सम्यक ज्ञान की ओर बढ़ता है, वही बुद्धिमान है। जो पुरुषार्थपूर्वक रत्नत्रय को प्राप्त कर निर्वाण की ओर बढ़ता है, वही वास्तविक पुरुष है। आचार्यश्री ने कहा कि जीवन में घर-परिवार, समाज और राष्ट्र का कोई भी कार्य विवेकपूर्वक करना चाहिए। ''जो व्यवहार स्वयं को पसंद न हो, वह दूसरों के साथ भी न करें।'' जीवन में दूसरों को मुस्कुराहट देंगे तो मुस्कुराहट मिलेगी और दुःख देंगे तो दुःख ही मिलेगा। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को ज्ञानियों से अपने आत्मकल्याण, जन्म-मरण से मुक्ति और जीवन की सही दिशा से जुड़े प्रश्न करने चाहिए। यही प्रश्न जीवन की दिशा तय करते हैं। प्रवक्ता रोमिल जैन ने बताया कि अष्टान्हिका पर्व पर अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज के 9 निर्जलाहार उपवास के बाद पारणा हुआ। मुनि पीयूष सागर महाराज के निर्देशन में श्रद्धालुओं ने ढोल-ताशों के साथ भक्ति नृत्य कर तप की अनुमोदना की। पारणा के बाद शिष्य ने गुरु के चरण पखारकर आशीर्वाद लिया। श्रद्धालुओं ने कल्याणमंदिर विधान की पूजा-अर्चना कर अर्घ्य भी समर्पित किए। यह जानकारी प्रचार-प्रसार संयोजक रोमिल पाटणी सोनकच्छ, नरेंद्र अजमेरा एवं पीयूष कासलीवाल औरंगाबाद ने दी।

चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मंदिर में 2 अगस्त को चातुर्मास कलश स्थापना

जयपुर. शाबाश इंडिया। पारस विहार, मोहनपुरा स्थित करीब 300 वर्ष प्राचीन पाषाण प्रतिमा वाले चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य कुशाग्रनंदी महाराज के आशीर्वाद से प्रतिदिन अभिषेक एवं शांतिधारा की जा रही है। अध्यक्ष पवन गोदिका ने बताया कि आचार्य विराग सागर महाराज एवं पट्टाचार्य विशुद्ध सागर महाराज के शिष्य मुनि विश्व विजय सागर महाराज के मुखारविंद से शांतिधारा हुई। इसमें अमिताभ-मधु भारिल्ल, कमल कुमार-अनीता पाटनी, प्रेमचंद-प्रेम देवी, दिनेश-नीरू, चित्रांश-महिमा, श्रेयांस-सोनाली, हर्षित पांड्या, पवन-सरोज, प्रतीक-रुचि सहित श्रद्धालुओं ने पुण्यार्जन किया। मुनिश्री के 9वें चातुर्मास की कलश स्थापना 2 अगस्त को दोपहर 12:30 बजे पंडित सुरेंद्र सलूम्बर एवं संगीतकार मनोज जैन के सान्निध्य में होगी। धर्मेंद्र गोदिका ने बताया कि मंदिर में अभिषेक-शांतिधारा के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हैं। श्रद्धालु जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगांठ एवं पुण्यतिथि जैसे विशेष अवसरों पर भी अभिषेक-शांतिधारा कर धर्मलाभ ले सकते हैं।

श्रद्धांजलि

हमारे प्रिय मित्र देवांग-निशा शाह की पूजनीय दादी जी

श्रीमती सुशीला देवी शाह

(धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री देवेंद्र जी शाह)

के स्वर्गवास गमन पर हम सभी मित्रगण भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

विनोद (मोनू)- रवीना छाबड़ा
पुष्पेश-सुरभि कांकरिया
अभिनव-निकिता चोपड़ा
अनिकेत-आरती हरकावत

श्रद्धांजलि

हमारे प्रिय मित्र देवांग-निशा शाह की पूजनीय दादी जी

श्रीमती सुशीला देवी शाह

(धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री देवेंद्र जी शाह)

के स्वर्गवास गमन पर हम सभी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

हितेश-सपना भांडिया
निखिल-सलोनी जैन
देवेन-ख़ुशी हरकावत
ऋषभ-भाविका गोदीका
रोहिताश-निकिता बोहरा

तीये की बैठक

अत्यन्त दुख के साथ सूचित किया जाता है कि हमारी पूज्यनीया

श्रीमती सुशीला देवी शाह

(धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री देवेंद्र जी शाह)

का स्वर्गवास 31.07.2026 को हो गया है। **तीये की बैठक** 02.08.2026 को प्रात: 11:15 बजे अणुविभा केन्द्र, गौरव टॉवर जयपुर पर होगी।

शोकाकुल

दिनेश–सुलेखा, दिलीप–आशा , मुकेश–बबीता (पुत्र–पुत्रवधू), देवांग–निशा, देवांशु–पारुल, देवेश–कृति (पौत्र–पौत्रवधू), ईशानी (पौत्री), शिवाली–सम्भव, अग्रिमा–अतिशय, मानुषी–आदित्य (पौत्री–पौत्री दामाद), सरस्वती, महेंद्र–सुनीता, राकेश, सुरेंद्र, राजप्रमोद, राजीव, जयवर्धन, आशीष एवं समस्त शाह परिवार, प्रभा–नवीन जी सोनी, मधु–दिनेश जी बाकलीवाल (ननद–ननदोई)

पीहरपक्ष

कमलचंद, राजेंद्र, नेमी, सुशील, प्रदीप, राजेश, रितेश एवं समस्त निगोतिया परिवार, सुरीला–चन्द्रप्रकाश जी काला, आशा–विवेक जी काला (बहन–बहनोई)

फर्म: जैम शॉप, सिल्वर शॉप, हैंडीक्राफ्ट्स सोर्स, चमेली वाला मार्केट
निवास: D-6,7 DDM हाऊस इनकम टैक्स कालोनी दुर्गापुरा, जयपुर
मो. 9314505740, 9314505758, 9314505735

॥ जय जिनेन्द्र ॥

हमारी आदरणीय बहन

श्रीमती सुशीला जी शाह

(धर्मपत्नी स्व. देवेंद्रजी शाह)

का स्वर्गवास 31.07.2026 (शुक्रवार) को हो गया हैं।

बिचले दिन की बैठक

01.08.2026 (शनिवार) मध्याह्न 1:00 से सायंकाल 4:00 बजे तक

स्थान : दुर्गापुर दिगंबर जैन मंदिर

तीये की बैठक

02.08.2026 (रविवार) प्रात: 11:15 बजे
स्थान : अणुविभा केंद्र मालवीय नगर

पीहरपक्ष 11.00 बजे अणुविभा केंद्र के बाहर एकत्रित होकर मुख्य बैठक में शामिल होंगे।

शोकाकुल

कमलचन्द, राजेन्द्र, नेमी, अशोक, सुशील (भ्राता)
प्रदीप, राजेश, संजय, रितेश, राजीव, अजय, विपिन, रिषभ, रोमेश (भतीजे)
सुरीला- चन्द्रप्रकाश काला
आशा- विवेक काला (बहन-बहनोई)
एवं समस्त निगोतिया परिवार

राखी और लाइफ स्टाइल प्रदर्शनी का आयोजन, विधायक कालीचरण सराफ ने किया अवलोकन

महिलाओं ने लगाईं विभिन्न उत्पादों की 46 स्टॉल, बड़ी संख्या में पहुंचे लोग

जयपुर. शाबाश इंडिया

मालवीय नगर सेक्टर-3 स्थित दिगंबर जैन शांतिनाथ मंदिर में 'बंधन एक पहल' ग्रुप की ओर से राखी एवं लाइफ स्टाइल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। स्थानीय विधायक कालीचरण सराफ ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इस अवसर पर बंधन ग्रुप की संयोजिका शैफाली जैन, मंदिर कमेटी के सदस्यों, सामाजिक कार्यकर्ता नरेंद्र जैन बाकलीवाल एवं गणमान्यजनों ने विधायक कालीचरण सराफ का साफा पहनाकर एवं माल्यार्पण कर स्वागत किया। सराफ ने प्रदर्शनी में लगी सभी स्टॉल का अवलोकन कर प्रतिभागियों से संवाद किया। उन्होंने विभिन्न उत्पादों की जानकारी ली और महिला प्रतिभागियों के प्रयासों की सराहना की। प्रदर्शनी में महिलाओं की ओर से विभिन्न उत्पादों की कुल 46 स्टॉल लगाई गईं। यहां राखियों के साथ लाइफ स्टाइल से जुड़े विभिन्न उत्पाद एक ही छत के नीचे प्रदर्शन एवं बिक्री के लिए उपलब्ध कराए गए। प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में लोगों ने पहुंचकर स्थानीय उत्पादों की खरीदारी की। कार्यक्रम का संचालन सुनील बड़जात्या ने किया। इस अवसर पर अजीत बड़जात्या एवं महेंद्र जैन सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

असम के बाढ़ पीड़ितों के लिए आशीर्वाद ओल्ड एज होम ने भेजी राहत सामग्री

कपड़े और बेडशीट सहित आवश्यक सामग्री की रवाना, जरूरतमंद परिवारों की मदद का आह्वान

जयपुर. शाबाश इंडिया। आशीर्वाद ओल्ड एज होम की ओर से असम में बाढ़ से प्रभावित जरूरतमंद परिवारों की सहायता के लिए कपड़े एवं बेडशीट सहित राहत सामग्री भेजी गई। संस्था का उद्देश्य आपदा की घड़ी में पीड़ित परिवारों तक आवश्यक सामग्री पहुंचाकर मानवता और सेवा का संदेश देना है। संस्था के अध्यक्ष धीरज शर्मा ने बताया कि प्राकृतिक आपदाओं के समय समाज के प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि वह जरूरतमंदों की सहायता के लिए आगे आए। उन्होंने कहा कि सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है और मानवता की सच्ची पहचान दूसरों के दुख में सहभागी बनने से होती है। इस अवसर पर संस्था के सदस्य रेणु जिंदल, अंजना शर्मा, दीपक गोधा एवं अनीश कुमार उपस्थित रहे। सदस्यों ने राहत सामग्री के संग्रह, पैकिंग एवं भेजने की व्यवस्था में सक्रिय सहयोग किया और असम के बाढ़ प्रभावित परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की। आशीर्वाद ओल्ड एज होम ने सामाजिक संगठनों एवं आमजन से आपदा प्रभावित परिवारों की यथासंभव सहायता करने और इस सेवा अभियान में योगदान देने की अपील की।

विवेक विहार आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में आर्यिका सुविज्ञमति माताजी ससंघ का मंगल प्रवेश

गाजे-बाजे के साथ जुलूस निकालकर की अगवानी, महिला मंडल ने 21 थाल से किया पाद प्रक्षालन

जयपुर. शाबाश इंडिया। विवेक विहार स्थित आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में आर्यिका सुविज्ञमति माताजी ससंघ का चातुर्मास के लिए गाजे-बाजे के साथ मंगल प्रवेश हुआ। जैन समाज के श्रद्धालुओं ने उत्साह और भक्तिभाव से माताजी ससंघ की अगवानी की। चातुर्मास समिति के संयोजक नरेश जैन मेड़ता एवं भागचंद पाटनी ने बताया कि प्रातः 6:30 बजे पद्मावती कॉलोनी स्थित पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर से पदविहार शुरू हुआ। दाना-पानी, जनपथ, श्याम नगर से विशाल जुलूस के साथ लक्ष्मण पथ, शिव सर्किल और देवी नगर होते हुए आर्यिका संघ ने आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, विवेक विहार में मंगल प्रवेश किया। इस दौरान विवेक विहार जैन समाज सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने ढोल-बैंड की धुन पर नृत्य करते हुए आर्यिका संघ का स्वागत किया। महिला मंडल ने 21 थाल के साथ माताजी का पाद प्रक्षालन किया और मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। नरेश जैन मेड़ता ने बताया कि मंगल प्रवेश के अवसर पर आचार्य सुनील सागर जी महाराज के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्वलन किया गया। इसके बाद माताजी के पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट की धार्मिक क्रियाएं हुईं। आर्यिका सुविज्ञमति माताजी ने श्रद्धालुओं को मंगल प्रवचन भी दिए। इस अवसर पर विभिन्न मंदिरों से आए समाज के पदाधिकारियों का स्वागत-अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में समाज के पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य, सुविज्ञ चातुर्मास समिति के सदस्य, महिला मंडल पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

अल्पायु में असाधारण पुरुषार्थ से रचा जिनशासन का इतिहास

त्रिलोक ऋषिजी की पुण्य स्मृति में युवाचार्यश्री ने किया गुणगान, शांतिभवन में धर्मसभा, महापुरुष के ज्ञान, साधना, साहित्य सृजन और जिनशासन सेवा को किया नमन

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। कविकुलभूषण पूज्यपाद त्रिलोक ऋषिजी महाराज का जीवन केवल साधना और संयम की यात्रा नहीं, बल्कि असाधारण पुरुषार्थ, अद्वितीय प्रतिभा, आगम ज्ञान, साहित्य सृजन और जिनशासन के प्रति समर्पण की प्रेरणादायी गाथा है। उनके पुण्य स्मृति दिवस पर शांतिभवन में आयोजित धर्मसभा में श्रमणसंघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का स्मरण करते हुए कहा कि कुछ महापुरुष अपने जीवन में ऐसे कार्य कर जाते हैं, जिन्हें सामान्य दृष्टि से असंभव माना जाता है। त्रिलोक ऋषिजी का संपूर्ण जीवन ऐसे ही अद्भुत पुरुषार्थ का साक्षी है। युवाचार्यश्री ने कहा कि पुण्य स्मृति केवल किसी महापुरुष को याद करने का अवसर नहीं, बल्कि उनके जीवन से अपने भीतर शुभता, पवित्रता और निर्मलता जगाने का अवसर है। त्रिलोक ऋषिजी का जीवन आत्मसाधना के साथ असंख्य भव्य आत्माओं को ज्ञान, धर्म और साधना के मार्ग पर अग्रसर करने वाला रहा। उन्होंने बताया कि विक्रम संवत 1904 में रतलाम में जन्मे त्रिलोकचंद के जन्म से कुछ माह पूर्व ही पिता दुलीचंदजी सुराणा का देहावसान हो गया था। धर्मपरायण माता नानूबाई ने विपरीत परिस्थितियों में दृढ़ता से परिवार का पालन-पोषण किया। युवाचार्यश्री ने कहा कि जीवन में दुःख से कोई अछूता नहीं रहता, लेकिन जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपने दायित्व से विमुख नहीं होता, वही कर्तव्य और चरित्र की कसौटी पर खरा उतरता है।

10 वर्ष की आयु में ली दीक्षा, 17 आगम किए कंठस्थ

रतलाम में पूज्य अवंत ऋषिजी महाराज के प्रवचन से परिवार को संसार की वास्तविकता का बोध हुआ। माता नानूबाई, बहन हीरा, भाई कुंवर और बालक त्रिलोकचंद ने वैराग्य का मार्ग स्वीकार किया। त्रिलोकचंद ने करीब 10 वर्ष की अल्पायु में दीक्षा ग्रहण की और त्रिलोक ऋषिजी बने। युवाचार्यश्री ने बताया कि दीक्षा के बाद अल्प अवधि में ही त्रिलोक ऋषिजी ने असाधारण ज्ञान-पिपासा और स्मरणशक्ति का परिचय दिया। करीब साढ़े 7 वर्ष के गुरु सान्निध्य में उन्होंने 17 आगम कंठस्थ कर लिए। उत्तराध्ययन सूत्र जैसे विशाल आगम का गहन स्वाध्याय उनकी विलक्षण एकाग्रता और स्मरणशक्ति का प्रमाण था। उन्होंने आगमों का चिंतन-मंथन कर उनके सार को जीवनोपयोगी साहित्य और काव्य के रूप में समाज के सामने रखा।

सरल भाषा में जनमानस तक पहुंचाया आगम ज्ञान

युवाचार्यश्री ने कहा कि त्रिलोक ऋषिजी की साहित्य साधना में आगम की प्रामाणिकता, भाषा की सरलता, काव्य की सरसता और जीवनोपयोगी संदेश का अद्भुत समन्वय था। उनकी सवैया और छंद रचनाओं में पंच परमेष्ठी, अरिहंत स्वरूप, जिनवाणी और धर्मसाधना के गूढ़ तत्वों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया। उस समय सामान्यजन और विशेषकर महिलाओं के लिए संस्कृत-प्राकृत के कठिन ग्रंथों का अध्ययन सहज नहीं था। ऐसे में उन्होंने सरल हिंदी में रचनाएं प्रस्तुत कर आगम चिंतन को जनमानस तक पहुंचाया। उनकी रचनाओं में धर्मोपदेश, स्तवन और जीवन की अनेक उलझनों का समाधान मिलता है। युवाचार्यश्री ने उनके सृजनात्मक कौशल का उल्लेख करते हुए कहा कि त्रिलोक ऋषिजी दोनों हाथों और दोनों पैरों से लेखन करने में सक्षम थे। उनके हस्तलिखित पृष्ठों की अक्षर-सज्जा इतनी सूक्ष्म और स्पष्ट थी कि वह मुद्रित अक्षरों जैसी प्रतीत होती थी। सीमित साधनों में अत्यंत सूक्ष्म लेखन के माध्यम से उन्होंने विशाल धार्मिक साहित्य का सृजन किया। दशवैकालिक सूत्र जैसे ग्रंथ को सीमित स्थान में लिखना उनकी लेखन कला, एकाग्रता और समय-साधना का उदाहरण है।

भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान दीप महाअर्चना में गूंजे भगवान आदिनाथ के जयकारे

जयपुर. शाबाश इंडिया। सूरजपोल गेट स्थित श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर मुनिबाड़ी में 48 दीपकों द्वारा ऋद्धि मंत्रों से युक्त भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान दीप महाअर्चना का संगीतमय आयोजन किया गया। इस दौरान मंदिर प्रांगण भगवान आदिनाथ के जयकारों से गुंजायमान हो उठा। समाजश्रेष्ठी सुनीता, महावीर-मोनिका एवं दिनेश-दीपिका कासलीवाल शक्तिनगर परिवार की ओर से विश्व में सुख, शांति, समृद्धि और आरोग्यता की कामना के साथ दीप महाअर्चना आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान आदिनाथ के चित्र के समक्ष अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। गायकों ने भक्तिमय प्रस्तुतियां दीं और ऋद्धि मंत्रों के साथ भक्तामर स्तोत्र का वाचन किया गया। श्रद्धालुओं ने हाथों में जैन धर्म ध्वजा एवं दीपक लेकर भक्ति नृत्य करते हुए मुख्य मंडल पर दीपक चढ़ाए। इससे पूर्व विश्व शांति की कामना के साथ णमोकार महामंत्र का सामूहिक जाप किया गया। भजनों की प्रस्तुतियों पर श्रद्धालुओं ने झूमकर प्रभु भक्ति की। मंदिर समिति की ओर से कासलीवाल परिवार का माल्यार्पण एवं दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर मुनिबाड़ी मंदिर समिति, शक्तिनगर, सिद्धार्थ नगर एवं चूलगिरी यात्रा संघ के सदस्यों सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

पर्यावरण संरक्षण के लिए अर्हम फाउंडेशन ने लगाए 100 से अधिक पौधे

बजाज नगर के सरकारी विद्यालय में पौधरोपण, सदस्यों ने लिया देखभाल का संकल्प

जयपुर. शाबाश इंडिया। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में पहल करते हुए अर्हम फाउंडेशन की ओर से बजाज नगर स्थित सरकारी विद्यालय में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्था के सदस्यों एवं स्थानीय नागरिकों की सहभागिता से विद्यालय परिसर में 100 से अधिक पौधे लगाए गए। समाजसेवी विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लेने के साथ लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल करने का भी वचन दिया। विद्यालय परिसर में पौधरोपण से आने वाले समय में हरियाली बढ़ने के साथ विद्यार्थियों को स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण मिलेगा। संस्था के पदाधिकारियों ने कहा कि पौधरोपण कार्यक्रम पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के साथ समाज में जागरूकता बढ़ाने का भी महत्वपूर्ण माध्यम हैं। ऐसे प्रयासों से जनभागीदारी को बढ़ावा मिलता है और हरित भविष्य की दिशा में सकारात्मक पहल होती है। अंजू बैराठी ने बताया कि फाउंडेशन के प्रयास की स्थानीय लोगों ने सराहना की और भविष्य में भी सामाजिक एवं पर्यावरण संरक्षण से जुड़े कार्यों में सक्रिय भागीदारी का संकल्प लिया। कार्यक्रम में फाउंडेशन की सदस्य निशा अग्रवाल, सुनीता काला, गरिमा जैन एवं वर्षा अजमेरा सहित करीब 25 सदस्याएं उपस्थित रहीं। पौधरोपण के लिए स्थान उपलब्ध कराने पर फाउंडेशन के अध्यक्ष राजेंद्र जैन ने विद्यालय के प्रधानाचार्य का आभार व्यक्त किया।